A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 06 अक्टूबर, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 348, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

फिसला जुबां से वो जो
फिसलता चला गया
हर बात में वो
बात बदलता चला गया।

सूरज ढला था शाम को
उग आया फिर सुबह
इंसान जो ढला तो,
फिर ढलता चला गया।

मंज़िल की धुन सवार
रही मुझ पे इस क़दर
मैं राह पर अंगारों की
चलता चला गया।

रोकर, कभी मुस्का के,
कभी बात बनाकर
हर कोई मुझ नादान
को छलता चला गया।

उसकी जड़ों मे
दुनिया ज़हर डालती रही
प्यार का लेकिन
शजर फलता चला गया।

ज़ख्मों पे जिसके प्यार का
मरहम था लगाया
वो ज़ख्मों पर मेरे
नमक मलता चला गया।

तपता रहा वो
दिन- चढ़े के आफताब-सा
मैं मोम की मानिंद
पिघलता चला गया।

दूसरे का देख सुख
उसमे जलन जगी
फिर उस जलन मे खुद
वही जलता चला गया।

– दिनेश मालवीय अश्क

प्रसंगवश

साधारण भक्ति संदेश भी विवाद का कारण क्यों बन रहे हैं?

आमना बेगम

हाल ही में 'I Love Muhammad' को लेकर विवाद ने मुझे मेरे अपनी परवरिश की याद दिला दी, जो बरेलवी मुस्लिम समुदाय में हुई थी। बरावफात, जिसे माउलिद, मिलाद-उल-नबी या केवल पैगंबर का जन्मदिन भी कहा जाता है, एक गर्मजोशी भरा मौसम था। मोहल्ले इस अवसर पर जीवंत हो जाते थे, जो हमेशा याद रहते हैं। सड़कों पर बिजली की लाइटों की स्ट्रिंग्स से चमक होती थी। अस्थायी मेहराब बड़े ध्यान से बनाए जाते थे। खूबसूरत सजावट की जाती थी। पुरुष और महिलाएं जुलूस और रात भर की प्रार्थनाओं के लिए इकट्ठा होते थे।

फिर वहां धर्म-संबंधित पवित्र वस्तुएं थीं, जो इतिहास और आस्था दोनों का महत्व रखती थीं। उन्हें सभी के देखने के लिए प्रदर्शित किया गया था, जिससे लोगों में श्रद्धा और सम्मान की भावना पैदा होती थी। एक बच्चे के लिए यह जादुई लगता था, ऐसा जैसे आस्था केवल निजी नहीं बल्कि साझा, जिया हुआ और दिखाई देने वाला अनुभव हो। पीछे मुड़कर देखने पर यह सिर्फ रिवाज नहीं था, बल्कि समुदाय की पहचान का जश्न था।

बारावफ़ात के बारे में मुझे जो एकमात्र विवाद पता था, वह धार्मिक था। अल्ट्रा-कंजरवेटिव आंदोलनों जैसे वहाबीज़्म और सलाफ़िज़्म ने लंबे समय तक इसे 'अवांछनीय नवाचार' (बिद'अह) कहा। उनका दावा था कि इसका कोई आधार कुरान या प्रारंभिक इस्लामिक प्रथा में नहीं है। इसी कारण से, सऊदी अरब और कतर जैसे स्थानों में यह जश्न पूरी तरह से मना है। लेकिन तब भी, यह संघर्ष दूर की कोई बात लगती थी - ऐसा कुछ जो बहुत दूर, अपनी रूढ़िवादी मान्यताओं वाले समाजों में हो रहा हो।

यहां भारत में, खासकर बरेलवी समुदाय में, बरावफात पर कभी बहस नहीं हुई। इसे जिया गया। यह खुशी, याद और भक्ति का समय था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह दिन ही विवाद का केंद्र बन जाएगा। यह धार्मिक बहस की वजह से नहीं बल्कि एक साधारण भक्ति संदेश की वजह से. केवल कुछ शब्दों वाला एक बैनर, 'मैं मोहम्मद (PBUH) से प्यार करता हूं,' शक, बहस और राजनीतिक हलचल का कारण बन सकता है। यह दिखाता है कि समुदायों के बीच अविश्वास कितना गहरा है। आस्था और प्रेम की अभिव्यक्ति अब किसी तरह विवाद और राजनीति का मुद्दा बन गई है।

दूसरी ओर कहा जा रहा है कि यह केवल 'I Love Muhammad (PBUH)' पोस्टर का मामला नहीं है। उनका कहना है कि एफआईआर इसलिए दर्ज की गई क्योंकि ऐसा प्रदर्शन पहले कभी नहीं हुआ। यह बरावफात आयोजकों द्वारा लाया गया 'नई परंपरा' है और इसे नए स्थान पर लगाने से अराजकता फैल सकती है। लेकिन धार्मिक व्यक्ति के प्रति प्यार का साधारण संदेश कैसे उत्तेजना बन जाता है? चाहे यह नया जोड़ हो या अलग जगह पर रखा गया हो, हमारी प्रतिक्रिया शक हो तो यह हमारे बारे में क्या कहता है?

यह उस गलत तर्क की तरह है जो अक्सर तब इस्तेमाल होता है जब हिन्दू धार्मिक जुलूस 'मुस्लिम इलाकों' से गुजरते हैं। किसी आपत्ति या हिंसा को वैसा ही सही मान लिया जाता है जैसे यह अनिवार्य था. यह तर्क तब भी उतना ही बेतुका है जितना अब है। यह मानता है कि लोग साथ नहीं रह सकते, एक-दूसरे के धर्म को बिना 'विरोधी' समझे सहन नहीं कर सकते। एक बार यह सोच जड़ पकड़ लेती है तो अविश्वास का चक्र शुरू हो जाता है। एक पक्ष दूसरे के प्रदर्शन से खतरा महसूस करता है, दूसरा पक्ष सुरक्षात्मक और शकपूर्ण हो जाता है। बहुत जल्दी, छोटी-छोटी बातें–जैसे जुलूस, पोस्टर या प्रार्थना–तनाव का कारण बन जाती हैं। भक्ति और जश्न अब उत्तेजना के रूप में पेश किए जाते हैं और भारत में समुदाय दूर हो रहे हैं।

यही वह समस्या है जिसे जमीन पर हल करना जरूरी है। ऐसे घटनाओं की राजनीति आम नागरिकों के लिए कुछ नहीं करती। यह केवल राजनेताओं को फायदा देती है। सबसे जोरदार आवाजें, जो पूरे समुदाय की ओर से बोलने का दावा करती हैं, बिना वास्तविक शासन या जवाबदेही के ताकत हासिल कर लेती हैं। आम लोगों को इसके बदले क्या मिलता है? सबसे ज्यादा, एक खोखला सुरक्षा का एहसास या दूसरे समुदाय पर हल्का प्रभुत्व महसूस होता है।

आइए यह न दिखावा करें कि यह विभाजन पूरी तरह दूसरों ने बनाया है। एक समुदाय के रूप में मुसलमानों ने भी इसे गहरा करने में काफी योगदान दिया है। जब 'सर तन से जुदा' जैसे नारे–बेअदबी के नाम पर हत्या की अपील–प्रदर्शनों में सामान्य हो जाते हैं, तो हमने आग में ईंधन डाला। जैसा कि मौलाना वहिदुद्दीन खान हमेशा कहते थे, कुरान में बेअदबी के लिए कोई सजा नहीं दी गई है। आप किसी तर्क का जवाब तर्क से दें, तलवार से नहीं। लेकिन हम नागरिक मतभेद को अपनाने में असफल रहे। हमने शर्तीय हिंसा को जायज ठहराया। हमने अपनी आस्था को राजनीति में बदल दिया। और आज, भले ही यह केवल प्यार का साधारण और सकारात्मक संदेश हो, इसे भी हमला माना जाता है। यह उन लोगों को माफ़ नहीं करता जो नफरत और अन्याय से लाभ उठाते हैं, लेकिन इसका मतलब है कि हमें भी आत्ममंथन करने की जरूरत है।

अगर हम अपने त्योहारों, अपनी आस्था और अपने सार्वजनिक स्थानों को फिर से हासिल करना चाहते हैं, तो हमें प्यार को हथियार बनने से रोकना शुरू करना होगा। लेकिन यह तभी संभव है जब समुदाय हर मतभेद को युद्धभूमि में बदलना बंद करें, और जब हम आस्था और सत्ता की राजनीति को अलग करना सीखें। क्योंकि जब भक्ति प्रतिस्पर्धा बन जाती है, तो हर कोई हारता है–धर्म का अर्थ, सहअस्तित्व की भावना, और आम लोग जो केवल बिना भय के जीना चाहते हैं।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बंगाल के दार्जिलिंग में 'बरपा' कुदरत का कहर

पुल टूटा, भूस्खलन भी हुआ, 20 लोगों की मौत

दार्जिलिंग (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के उत्तरी हिस्से में स्थित दार्जिलिंग की पहाड़ियों में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। लगातार बारिश के कारण कई जगहों पर भूस्खलन हुए। इन भूस्खलनों से 20 लोगों की मौत हो गई। कई अन्य लोग अभी तक लापता हैं। भूस्खलन के कारण कई घर पूरी तरह से बह गए। इन घरों में रहने वाले लोगों ने अपना सब कुछ खो दिया। सड़कें भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं। कई जगहों पर सड़कें टूट गईं या मलबे से भर गईं। इससे आवागमन पूरी तरह से रुक गया। कई दूरदराज के गांवों का संपर्क बाकी दुनिया से टूट गया। वे गांव अब अकेले पड़ गए हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल और जिला प्रशासन की टीमें बचाव कार्य में लगी हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पीड़ितों के लिए मुआवजे की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि वह 6 अक्टूबर को उत्तर बंगाल का दौरा करेंगी। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस घटना पर दुख जताया है। उन्होंने कहा कि स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है। एनडीआरएफ और जिला प्रशासन की ओर से मिली रिपोर्ट

के अनुसार, कई स्थानों सरसली, जसबीरगांव, मिरिक बस्ती, धार गांव (मेची), नागराकाटा और मिरिक झील क्षेत्र से लोगों के मारे जाने की खबर है। दार्जिलिंग उप-मंडल अधिकारी (एसडीओ) रिचर्ड लेप्चा ने बताया कि पुलिस, स्थानीय प्रशासन और आपदा प्रतिक्रिया टीम की मदद से बचाव और राहत अभियान जारी है।

12 घंटों में 300 मिलीमीटर से ज्यादा बारिश

ममता बनर्जी के अनुसार, केवल 12 घंटों में 300 मिलीमीटर से ज्यादा बारिश हुई, जिससे कम से कम सात जगहों पर भयंकर बाढ़ और भूस्खलन हुआ। उन्होंने इस स्थिति की तुलना पिछले महीने त्योहारों के मौसम में कोलकाता में आई भीषण बाढ़ से की। उन्होंने कहा कि 12 घंटे से लगातार भारी बारिश हो रही है। सात जगहों पर भूस्खलन हुआ है। मैं कड़ी नजर रख रही हूं और उम्मीद है कि सोमवार दोपहर तीन बजे तक वहां पहुंच जाऊंगी। भूस्खलन और सड़क मार्ग पर अवरोधों के कारण पूरे क्षेत्र में हजारों पर्यटक फंसे हुए हैं।

पीएम मोदी ने जताया दुख बोले- हादसे से बेहद दुखी हूं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मौतों पर शोक व्यक्त किया और कहा कि भारी बारिश और भूस्खलन के मद्देनजर दार्जिलिंग और आसपास के क्षेत्रों की स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है। नागराकाटा के धार गांव में मलबे से कम से कम 40 लोगों को बचाया गया जहां भारी भूस्खलन के कारण कई घर ध्वस्त हो गए।

उत्तर बंगाल विकास मंत्री उदयन गुहा ने स्थिति को चिंताजनक बताया और रिपोर्ट का हवाला देते हुए मृतकों की संख्या 17 बताई थी। गुहा ने कहा कि जान का नुकसान दुखद है। हमारी रिपोर्ट के अनुसार, मिरिक में 11 और दार्जिलिंग में छह लोगों की मौत हुई है। लेकिन अभी तक संख्या की पुष्टि नहीं हुई है। भूस्खलन के कारण मिरिक-सुखियापोखरी सड़क सहित प्रमुख मार्गों पर यातायात बाधित हो गया जबकि कई पहाड़ी बस्तियों की संचार लाइनें टूट गईं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह स्थिति का आकलन करने के लिए सोमवार को उत्तर बंगाल का दौरा करेंगी और फिलहाल राज्य सचिवालय नबान्न स्थित नियंत्रण कक्ष से घटनाक्रम पर नजर रख रही हैं।

कमरा छोड़कर आए हैं, फिर डेरा डालना है...

- संघ प्रमुख मोहन भागवत ने दोहराया अखंड भारत का संकल्प

सतना (नप्र)। बंटवारे के बाद सिंधी भाई पाकिस्तान नहीं गए, वे अविभाजित भारत आए। जो हम घर का कमरा छोड़कर आए हैं, कल उसे वापस लेकर फिर से डेरा डालना है। ये बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक

डॉ. मोहन भागवत ने रविवार को सतना में कही। उन्होंने अखंड भारत के संकल्प को एक बार फिर दोहराया। दरअसल, संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत सतना प्रवास पर थे। दूसरे दिन वे बाबा मेहर शाह दरबार की नई इमारत के लोकार्पण समारोह में लोगों को संबोधित कर रहे थे।

सारे सिंधी भाई यहां बैठे हैं। मुझे बड़ा आनंद है कि वो वहां नहीं गए थे

भागवत ने आगे कहा कि बहुत सारे सिंधी भाई यहां बैठे हैं। मुझे बड़ा आनंद है कि वो वहां नहीं गए थे। वह अविभाजित भारत गए थे। यह आदत नई पीढ़ी तक जानी चाहिए। क्योंकि हमारा एक घर है। परिस्थिति ने हमको उस घर से यहां भेजा है। क्योंकि वो घर और ये घर अलग नहीं है।

सीएम डॉ. मोहन यादव ने काजीरंगा नेशनल पार्क में हाथियों का प्रबंधन समझा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने काजीरंगा नेशनल पार्क का किया भ्रमण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने असम प्रवास के दौरान रविवार को विश्व प्रसिद्ध काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और चाय बागान का भ्रमण किया। उन्होंने बागान में चाय उत्पादन की प्रक्रिया का अवलोकन कर स्थानीय किसानों और श्रमिक बहनों से आत्मीय संवाद भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चाय उद्योग असम का गौरव और अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। परिश्रम, अपनत्व एवं सादगी की धरती असम और मध्यप्रदेश के बीच व्यापार-उद्योग के साथ ईको-टूरिज्म, वन्य जीव पर्यटन की दिशा में भी परस्पर सहयोग, विश्वास और साझेदारी को बढ़ाने के लिए विशेष पहल होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीव संरक्षण की मनमोहक झलक देखी एवं हाथियों को स्नेह से गन्ना खिलाकर दुलार किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां वन्यजीवों के संरक्षण संवर्धन के लिये नवाचारों के संबंध में जानकारी प्राप्त की और उद्यान भ्रमण के दौरान अजगर को प्राकृतिक आवास में छोड़ा।

सीएम बोले- मप्र में दो साल में 70 हाथियों ने घर बनाया- सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज मैं असम के काजीरंगा उद्यान में हाथी और राइनो समेत तमाम प्रकार के वन्यजीवों के संबंध में जानने आया हूं। हमारे यहां भी अब हाथी आ गए हैं। पहले हमारे यहां हाथी नहीं थे। दो साल में 70 से ज्यादा हाथी हमारे यहां बांधवगढ़ और अन्य अभ्यारण्यों में हैं। ऐसे में जान माल की रक्षा के साथ ही हाथी के जीवन की रक्षा के लिए काजीरंगा बहुत आदर्श अभ्यारण्य है। मैं अपने अधिकारियों के साथ यहां आया हूं। मुझे देखकर अच्छा लगा। बहुत बढ़िया प्रबंधन है। यहां से काफी सारी चीजें सीखेंगे।

असम के सीएम से बात कर वन्यजीव एक्सचेंज करेंगे

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारे यहां के वन्यजीवों को यहां एक्सचेंज करने के लिए मैं यहां के मुख्यमंत्री हिमंता विस्वा सरमा से बात करूंगा। हमारे वन्यजीवों की अच्छे से रक्षा हो और जिन्हें वन्यजीवों के विषय में जानने की जिज्ञासा है, उन्हें जानकारी मिले। पर्यटन के क्षेत्र में बढ़ावा देते हुए हमारे वन्यजीवों के साथ सह-अस्तित्व की भावना को लोग देखें और समझें।

उल्लेखनीय है कि काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक सींग वाले गैंडे सहित पूर्वी हिमालयी जैव विविधता का केन्द्र है। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व-धरोहर घोषित किया गया। यह उद्यान हाथियों, जंगली भैंसों, दलदली हिरणों और विभिन्न पक्षी प्रजातियों का आश्रय स्थल है। यह उद्यान वन्य जीवों की बड़ी संख्या के साथ वन्य जीव संरक्षण गतिविधियों के लिए भी विख्यात है।

बिहार में एसआईआर सफल अब इसे पूरे देश में कराएंगे

मुख्य चुनाव आयुक्त बोले-पोलिंग बूथों की 100 फीसदी वेबकास्टिंग की जाएगी

पटना (एजेंसी)। बिहार में चुनाव की तैयारियों को लेकर चीफ इलेक्शन कमिश्नर ज्ञानेश कुमार ने रविवार को पटना में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा, बिहार में एसआईआर पूरी तरह सफल रहा। मतदाता सूची में यह सबसे बड़ी पहल रही। 24 जून 2025 को एसईआर शुरू हुआ और वक्त पर समाप्त हुआ। सफल एसआईआर के लिए वोटर्स को धन्यवाद। अब इसे पूरे देश में कराएंगे। सीईसी ने बताया, 90 हजार 217 बूथ लेवल ऑफिसर ने बेहतर काम किया। पूरे देश में बनने वाले बूथ लेवल ऑफिसर के लिए बिहार प्रेरणा बना। उन्होंने कहा- बूथ तक मोबाइल ले जा सकेंगे। बूथ सेंटर से 100 मीटर की दूरी पर पोलिंग एजेंट बैठ सकेंगे। बिहार चुनाव में ईवीएम पर प्रत्याशियों की कलर फोटो लगाई जाएगी। बिहार में वन स्टॉप डिजिटल प्लेटफॉर्म भी बिहार में लागू कराया जाएगा। बूथ से 100 मीटर की दूरी से हर प्रत्याशी अपने एजेंट को लगा सकते हैं। पोलिंग बूथों की 100 फीसदी वेबकास्टिंग की जाएगी। ज्ञानेश कुमार ने कहा, ईवीएम जब मतदाता के पास जाए तो मतदाता उन्हें अच्छे से पहचान पाए, इसके लिए उनके लिए भी कार्ड शुरू किए गए हैं। अब पोलिंग बूथ के बाहर मोबाइल जमा कर वोट देने की सुविधा की गई है। इससे पहले मोबाइल घर या कहीं और छोड़कर आना होता था। सीईसी ने बताया कि अब बिहार के अलावा देश के किसी भी बूथ पर 1200 से ज्यादा वोटर नहीं होंगे। एसआईआर को चुनाव से पहले कराए जाने के सवाल पर सीईसी ने कहा, लोक प्रतिनिधि कानून के हिसाब से रिवीजन चुनाव से पहले कराना ही होता है। किसी का ये कहना कि रिवीजन चुनाव के बाद होना चाहिए ये न्याय संगत नहीं है। जब हमारे बीएलओ ने घर-घर जाकर मतगणना की, ड्राफ्ट सूची में जिनका नाम आया और उसके बाद सभी राजनीतिक दलों को दावे और आपत्ति करने का मौका दिया गया।

एअर इंडिया ड्रीमलाइनर की बर्मिंघम में इमरजेंसी लैंडिंग

- इमरजेंसी टर्बाइन खुलकर नीचे आया, अहमदाबाद में इसी मॉडल का प्लेन क्रैश हुआ था

अमृतसर (एजेंसी)। अमृतसर से इंग्लैंड के बर्मिंघम जा रही एअर इंडिया की फ्लाइट एआई-117 (बोइंग ड्रीमलाइनर 787-8) की बर्मिंघम एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई है। फ्लाइट ने 4 अक्टूबर को दोपहर 12.52 बजे अमृतसर से उड़ान भरी थी और करीब 10 घंटे 45 मिनट बाद बर्मिंघम पहुंची थी। लैंडिंग से पहले विमान की रैम एयर टरबाइन अपने आप ऐक्टिव हो गई, जिसके बाद पायलट ने एहतियातन इमरजेंसी लैंडिंग की। एअर इंडिया ने बताया कि सभी यात्री और क्रू पूरी तरह सुरक्षित हैं। जांच में पाया गया कि विमान के सभी इलेक्ट्रिकल और हाइड्रोलिक सिस्टम सामान्य रूप से काम कर रहे थे। फिलहाल विमान को ग्राउंड कर दिया गया है और उसकी दिल्ली वापसी वाली उड़ान रद्द कर दी गई है। यात्रियों को दूसरी फ्लाइट से भेजा गया है। दरअसल, बोइंग ड्रीमलाइनर का यही मॉडल 12 जून को अहमदाबाद में टेकऑफ के कुछ देर बाद ही क्रैश हो गया था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 06 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

देश का ऐसा गांव जहां बिना दुकानदार के चल रही हैं दुकानें

यहां ना चोरी होती है और ना दरवाजों पर लगता है कुंडा-ताला

कोहिमा (एजेंसी)। आज के दौर में जहां धोखाधड़ी, फरेब और चोरी आम बात हो गई है, वहीं नागालैंड का एक छोटा सा गांव अपनी ईमानदारी से सबका दिल जीत लेता है। इस गांव में ऐसी दुकानें हैं जहां न कोई दुकानदार होता है और न ही दुकानों पर ताला लगाया जाता है। लोग अपनी जरूरत का सामान खुद लेते हैं और जितने पैसे का सामान लेते हैं, उतने पैसे वहीं रख देते हैं। यहां कोई चोरी नहीं करता और न ही किसी को डर होता है कि उसका नुकसान होगा। इस गांव के लोग सच्चाई और विश्वास के प्रतीक बन चुके हैं। भारत में कई स्थान अपनी संस्कृति और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध हैं, लेकिन नागालैंड का खोनोमा गांव अपनी ईमानदारी और भरोसे के लिए

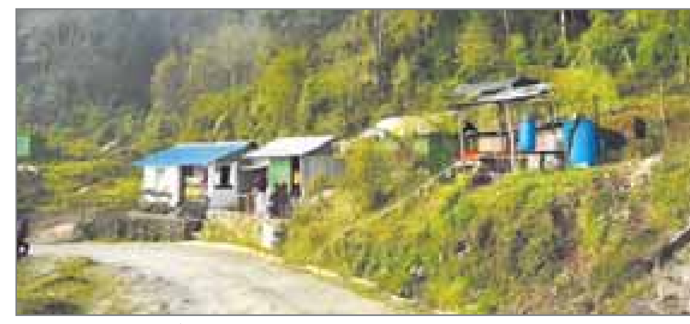

खास पहचान रखता है। इस गांव में वर्षों से ऐसी दुकानें हैं जहां कोई दुकानदार नहीं होता। ग्राहक खुद सामान चुनते हैं और उतनी ही राशि ईमानदारी से रखकर चले जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि इतने सालों में यहां किसी ने चोरी करने की कोशिश तक नहीं की। यही वजह है कि खोनोमा गांव ईमानदारी का प्रतीक कहलाता है। खोनोमा गांव नागालैंड में स्थित है और यह अपनी ईमानदारी, खूबसूरती और स्वच्छ वातावरण के लिए मशहूर है। यहां के लोग पीढ़ियों से बिना डर और शक के जीवन जीते हैं। दुकानों में सामान के साथ पैसे रखे होते हैं, फिर भी कोई चोरी नहीं करता। गांव वाले मानते हैं कि दूसरों का हक छीनना या धोखा देना गलत है। उनकी यही सोच और संस्कार इस गांव को पूरे देश में ईमानदारी का प्रतीक बनाते हैं। खोनोमा गांव पहला ग्रीन विलेज कहलाता है।

कराची में आतंकी संगठन आईएसआईएस-के के कमांडर की हत्या

- अज्ञात बंदूकधारी ने मारी गोली, अफगानिस्तान में करवाता था हमला

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के कराची शहर में अज्ञात बंदूकधारी ने हाल ही में आईएस आईएस-के के एक सीनियर कमांडर की गोली मारकर हत्या कर दी है। इसके आतंकी के मारे जाने से पाकिस्तान के अंदर दशकों से मौजूद

आतंकी तंत्र की फिर से पोल खुल गई है। द संडे गार्जियनने अफगानिस्तान स्थिति सुरक्षा सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि मारा गए आतंकवादी की पहचान हसन उपनाम से की गई है। ये आतंकी, पाकिस्तान आईआईएस-के का एक प्रमुख रणनीतिकार था, जिसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, ये आतंकी पेशावर का रहने वाला था और वो पाकिस्तान में आईएसआईएस-के के अभियानों में केंद्रीय भूमिका निभा रहा था। आने वाले दिनों में वो अफगानिस्तान में विस्फोटक हमलों को अंजाम देने की तैयारी कर रहा था।

अब प्राइवेट कंपनियां भी बनाएंगी मिसाइल-तोप और गोला-बारूद

ऑपरेशन सिंदूर से मिली सीख, रक्षा मंत्रालय ने खोले दरवाजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अपनी रक्षा क्षमताओं को दीर्घकालिक रूप से सुदृढ़ करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है।

रक्षा मंत्रालय ने मिसाइल, तोप के गोले, गोला-बारूद और आयुध के विकास और निर्माण का काम निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया है। इसका मकसद यह है कि लंबे चलने वावे युद्ध या सैन्य अभियान के दौरान देश के पास हथियारों की कमी न हो। सूत्रों के अनुसार, राजस्व खरीद मैनुअल में संशोधन किया गया है। इसके तहत अब कोई भी निजी कंपनी गोला-बारूद निर्माण इकाई स्थापित करने से पहले सरकारी कंपनी म्युनिशन इंडिया लिमिटेड से नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट लेने के लिए बाध्य नहीं होगी।

गोला-बारूद की कमी से बचने की तैयारी

रक्षा मंत्रालय का यह कदम इस उद्देश्य से भी प्रेरित है कि यदि भविष्य में कोई लंबा युद्ध छिड़ता है, तो भारतीय सेना गोला-बारूद की कमी का सामना न करे। अब तक भारत को कई बार आपातकालीन स्थिति में विदेशी विक्रेताओं से ऊंचे दामों पर हथियार खरीदने पड़े हैं। वर्तमान में रूस और पश्चिमी देश यूक्रेन युद्ध, इजरायल गाजा युद्ध में व्यस्त हैं। ऐसे में मिसाइलों और गोला-बारूद की वैश्विक मांग चरम पर है। दूसरी ओर पाकिस्तान को चीन से निरंतर सैन्य आपूर्ति मिल रही है। इससे भारत को अपनी घरेलू रक्षा उत्पादन क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हालांकि, सरकार ने स्पष्ट किया है कि रणनीतिक मिसाइलों का विकास और नियंत्रण केवल डीआरडीओ के अधीन रहेगा।

अयोध्या में घर में धमाका एक युवक की गई जान

- एक मकान जमींदोज, एक किलोमीटर तक सुनाई दी आवाज

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में एक घर में जोरदार विस्फोट हो गया। हादसा बीकापुर कोतवाली से महज 100 मीटर की दूरी पर हुआ। यह जगह राममंदिर से करीब 28 किलोमीटर दूर है। इस हादसे में एक घर जमींदोज हो गया। वहीं, मलबे में दबने से एक युवक की मौत हो गई। वहीं, 2 युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। धमाके से आसपास के 3-4 घरों की दीवारों में भी दरारें आई हैं। धमाके की आवाज करीब एक किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। फिर उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। धमाका कैसे हुआ, यह अभी साफ नहीं हो पाया है। फॉरेंसिक टीम को बुलाया गया है। टीम मौके से सैंपल एकत्र कर रही है। पुलिस टीम भी मौके पर है।

जहां सरकार फेल, वहां बाबा रामपाल ने जेल से पहुंचाई मदद

- हरियाणा के बाढ़ प्रभावित 200 गांवों को पाइप-मोटरें दीं; पंचायतें बोलीं-बाबा ने निहाल किया

फतेहाबाद (एजेंसी)। देशद्रोह समेत कई संगीन आरोपों में 11 साल से हिसार जेल में बंद सतलोक आश्रम संचालक रामपाल इन दिनों जलभराव से प्रभावित गांवों का मददगार बना हुआ है। उसकी ओर से हिसार, भिवानी, फतेहाबाद, जींद, झज्जर जिलों के 200 गांवों में पानी की निकासी के लिए पाइप लाइन और 15 से 20 हॉर्स पावर तक की मोटरें दी गई हैं। यह सामान पंचायतों के माध्यम से दिया गया है। मदद पाने वाले करीब 70 गांवों की लिस्ट सामने भी आई है। ज्यादातर उन गांवों में मदद पहुंचाई गई है, जिन्हें प्रशासन की तरफ से समय पर मदद नहीं मिली। इस पर कई सरपंचों का कहना है कि उन्होंने प्रशासन के पास आवेदन किया, लेकिन मामला फाइलों में भी उलझा रहा। इधर, आश्रम प्रमुख के पास एक बार अर्जी दी, उसके कुछ समय बाद ही सामान पहुंच गया। इन गांवों में प्लास्टिक की पाइपों से लेकर अलग-अलग हॉर्स पावर की मोटरें व तार तक पहुंचाई गई है। गांवों में चार हजार फीट से लेकर 44 हजार फीट तक पाइपें पहुंचाई गई है।

वांगचुक की मांग, लेह हिंसा की न्यायिक जांच हो

- कहा-जब तक ऐसा नहीं होता, जेल में रहूंगा, 4 लोगों की जान गई थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोनम वांगचुक ने लेह हिंसा के दौरान हुई 4 लोगों की मौत की स्वतंत्र न्यायिक जांच की मांग की है। उन्होंने जोधपुर सेंट्रल जेल से एक पत्र लिखा है, जो रविवार को जारी किया गया। वांगचुक ने लिखा- जिन लोगों ने अपनी जान गंवाई, उनके परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। मैं घायलों और गिरफ्तार लोगों

के लिए प्रार्थना करता हूं। 4 लोगों की मौत की जांच एक स्वतंत्र न्यायिक आयोग से होनी चाहिए, जब तक ऐसा नहीं होता, मैं जेल में ही रहूंगा। यह लेटर एडवोकेट मुस्तफा हाजी ने साझा किया है, जो लेह एपेक्स बॉडी के कानूनी सलाहकार हैं। उन्होंने और वांगचुक के भाई भाई त्सेतन दोरजे ले ने 4 अक्टूबर को जेल में वांगचुक से मुलाकात की थी। दरअसल, वांगचुक को 24 सितंबर को लेह हिंसा भड़काने के आरोप में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत 26 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था।

भविष्य के युद्धों से निपटने के लिए सेना की नई तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सैन्य आधुनिकीकरण और एकीकृत थियेटर योजना की दिशा में कदम बढ़ाते हुए सेना ने अपनी एकीकृत नई रुद्र ब्रिगेड का गठन कर दिया। सेना की उत्तरी कमान ने शनिवार को एक्स पर इसकी घोषणा की। इस ब्रिगेड में इंफैंट्री, मेकेनाइज्ड इंफैंट्री, आर्मर्ड यूनिट, आर्टिलरी, स्पेशल फोर्स, अनमैन्ड एरियल सिस्टम और ऐसे ही युद्धक कंपोनेंट शामिल किए गए हैं। इस ब्रिगेड को लॉजिस्टिक या कांबैट सपोर्ट जैसे विशेष कार्यों के लिए तैयार किया गया है। बता दें कि 26वें कारगिल विजय दिवस के मौके पर इस साल 26 जुलाई को सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने सेना के लिए नई रुद्र ब्रिगेड के गठन की घोषणा की थी। सेना की उत्तरी कमान ने अपनी पोस्ट में लिखा कि भारतीय सेना क्षमता विकास और भविष्य के युद्धों के लिए तैयारी पर अपनी ध्यान निरंतर बनाए हुए है। रक्षा विश्लेषकों का मानना है कि ब्रिगेड में विशेष बलों और मानवरहित प्रणालियों को शामिल करना परंपरागत ताकत को उभरती हुई तकनीक को जोड़ने की दिशा में एक कदम है। उम्मीद है कि यह नया गठन भविष्य के युद्धों के लिए भारत की तैयारी सुनिश्चित करेगा और साथ ही सीमाओं पर मजबूत संदेश भी भेजेगा। रुद्र ब्रिगेड को इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप (आइबीजी) की तर्ज पर तैयार किया गया है।

कमल के फूल जैसा टर्मिनल, सालाना 2 करोड़ यात्री क्षमता

पीएम मोदी 8 अक्टूबर को करेंगे उद्घाटन, शुरू हुई तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में हवाई यात्रा का अनुभव जल्द ही बदलने वाला है। मुंबई में दूसरा नया एयरपोर्ट यानी नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट शुरू होने वाला है। इस नए एयरपोर्ट पर यात्रियों को एक खास सुविधा मिलेगी। अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के लिए यात्री अपनी पहली उड़ान के एयरपोर्ट पर ही इमिग्रेशन क्लियर कर पाएंगे। यह एयरपोर्ट शुरुआत में हर साल दो करोड़ यात्रियों को संभालने की क्षमता रखेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 अक्टूबर को इस एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। इसके उद्घाटन के एक महीने के अंदर ही यहां से कमर्शियल उड़ानें शुरू हो जाएंगी। अहमदाबाद, सूरत और हैदराबाद जैसे शहरों से मुंबई आने वाले यात्री एयरपोर्ट पर ही इमिग्रेशन की

प्रक्रिया पूरी कर सकेंगे। इसके बाद वे अपनी अगली कनेक्टिंग फ्लाइट पकड़ पाएंगे। यह यात्रा को बहुत आसान और सुविधाजनक बना देगा। यह सुविधा दुबई, दोहा, अबू धाबी या सिंगापुर चांगी जैसे बड़े इंटरनेशनल हब जैसी होगी। अधिकारियों ने बताया कि इसमें एक बड़ा अंतर 'आत्मनिर्भरता' का होगा। इसका मतलब है कि ज्यादातर यात्री भारतीय एयरलाइंस से यात्रा करेंगे। वे विदेशी एयरलाइंस के लिए सिर्फ यात्री नहीं होंगे, बल्कि भारतीय एयरलाइंस को बढ़ावा मिलेगा। अधिकारियों ने बताया कि मुंबई में दो एयरपोर्ट होने से एक बड़ा फायदा होगा। यह डुअल एयरपोर्ट सिस्टम मुंबई को भारत से इंटरनेशनल पैसेंजर के लिए मुख्य प्रवेश द्वार बना देगा। इसके साथ ही यह टियर 2 और टियर 3 शहरों को भी दुनिया से बहुत अच्छे और प्रभावी तरीके से जोड़ेगा।

कोल्ड्रिफ सिरप कंपनी पर बड़े ऐक्शन की तैयारी

- एमपी में 11 बच्चों की जान गई, 5 और संदिग्ध मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोल्ड्रिफ कफ सिरप बनाने वाली कंपनी श्री सन फार्मास्युटिकल्स के खिलाफ सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन सख्त कार्रवाई करने की तैयारी में है। इस कफ सिरप से मध्य प्रदेश में 32 दिन में 16 बच्चों की मौत हो चुकी है। इन सभी की उम्र 1 से 5 साल के बीच थी। हालांकि

प्रशासन ने अब तक सिर्फ 11 मौतों की पुष्टि की है। कोल्ड्रिफ दवा की मैन्युफैक्चरिंग तमिलनाडु के कांचीपुरम में हो रही थी। अब इसे देश के तीन राज्यों (मध्य प्रदेश, केरल और तमिलनाडु) में बैन कर दिया गया है। देशभर में दवाइयों को कंट्रोल करने वाली संस्था दवा कंपनी के खिलाफ सख्त कदम उठाने के लिए तमिलनाडु फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन को पत्र लिखेगा।

तौकीर के करीबी का 5 करोड़ का मैरिज हॉल जमींदोज

बुलडोजर से बचे हिस्से को गिराया गया; दुकान भी सील

बरेली (एजेंसी)। रविवार को शाम तक 10 हजार स्क्वायर फीट में 5 करोड़ की लागत से बने मैरिज हॉल को जमींदोज कर दिया गया। प्रशासन का कहना है कि मैरिज हॉल का निर्माण सरकारी जमीन पर किया गया था। करीब 100 पुलिसवाले मौके पर तैनात रहे। इधर, स्वास्थ्य विभाग ने डॉ. नफीस की दुकान खान ऑप्टिकल्स को भी सील कर दिया। आरोप है कि डॉ. नफीस बिना डिग्री के खान ऑप्टिकल चला रहे थे। वहीं, शनिवार को तौकीर रजा के भतीजे मोहसिन को बिजली विभाग ने 1 करोड़ 26 लाख रुपए का बिल भरने का नोटिस जारी

किया है। यह नोटिस उस अवैध चार्जिंग स्टेशन का है, जिसे प्रशासन ने बुलडोजर से गिरा दिया था। डॉ. नफीस, तौकीर रजा की पार्टी इत्तेहाद मिल्लत काउंसिल के राष्ट्रीय महासचिव हैं। 3 दिन पहले नफीस और उसके बेटे फरहान को बरेली पुलिस ने गिरफ्तार किया था। डॉ. नफीस पर आरोप है कि उन्होंने ही 26 सितंबर को लोगों को प्रोटेस्ट के लिए बुलाया था। इसके अलावा, इंस्पेक्टर को हाथ काटने की धमकी दी थी। बरेली में 26 सितंबर को 'आई लव मोहम्मद' मामले को लेकर जुमे की नमाज के बाद बवाल हुआ था। इस मामले में 81 लोगों को जेल भेजा जा चुका है। अब तक कुल 10 एफआईआर दर्ज की गई हैं। 2,500 उपद्रवियों में से 200 को नामजद किया गया है।

पाकिस्तानी सेना के बाद रक्षामंत्री की भारत को धमकी

- कहा-अब जंग हुई तो भारत अपने ही फाइटर जेट्स के मलबे में दब जाएगा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने धमकी देते हुए कहा है कि अबकी बार जंग हुई तो भारत अपने लड़ाकू विमानों के मलबे के नीचे दब जाएगा। उन्होंने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि भारतीय लीडरशिप अपनी खोई हुई विश्वसनीयता पाने के लिए भड़काऊ बयान दे रही है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी नहीं बने 2000 नए बंकर

जम्मू-कश्मीर के 500 गांव पाक से सटे बॉर्डर से 6 किमी की रेंज में

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के 8 जिलों के करीब 500 गांव पाक से सटे बॉर्डर से 6 किमी के दायरे में हैं। इनमें से 60 गांव को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान काफी नुकसान हुआ था। 6 हजार से ज्यादा घर क्षतिग्रस्त हुए थे। 30 हजार लोगों को रातोंरात शिफ्ट करना पड़ा था। युद्ध रुकने के बाद हुए सर्वे में 2 हजार अतिरिक्त बंकर तुरंत बनाने की बात हुई, लेकिन

सिस्टम की लेटलतीफी से अब तक एक भी नया बंकर नहीं बन पाया है। जम्मू के संभागीय आयुक्त राकेश कुमार ने बताया कि निर्माण जल्द ही शुरू होगा।

संघ के शताब्दी वर्ष पर पथ संचलन में दो लाख से अधिक स्वयंसेवक शामिल

शहर में अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की अनोखी मिसाल दर्शाई गई

इंदौर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी वर्ष के अवसर पर रविवार को इंदौर शहर में इतिहास रच दिया गया। एक साथ 34 स्थानों से विशाल पथ संचलन निकाला गया, जिसमें दो लाख से अधिक स्वयंसेवकों ने भाग लिया। पूरा शहर भगवा रंग में सराबोर नजर आया। संघ के सरसंघ कार्यवाहक अरुण कुमार भी इस भव्य आयोजन में शामिल हुए।

सुबह से ही शहर के चौराहों, कॉलोनियों और मार्गों पर राष्ट्रभक्ति का अद्भुत नजारा दिखाई दिया। महिलाएं छतों से पुष्प वर्षा कर स्वयंसेवकों का स्वागत कर रही थीं, वहीं सड़कों पर रंगोलियों और भगवा ध्वजों से सजावट की गई थी। संघ के अनुशासन का यह दृश्य देख हर कोई प्रभावित हुआ। पथ संचलन सुबह 9 बजे से शुरू होकर शाम 3.30 बजे तक विभिन्न क्षेत्रों से गुजरता रहा। हर संचलन के साथ घोष दल भी शामिल था।

स्वयंसेवकों ने एक स्वर में 'वंदे मातरम्' और भारत माता की जय के जयघोष लगाए। संघ के इस उत्सव में समाज के सभी वर्गों व्यापारी, उद्योगपति, शिक्षक, विद्यार्थी और पेशेवरों ने भागीदारी निभाई। संघ की 360 शाखाओं और 1800 मोहल्लों में तीन माह से इस आयोजन की तैयारियां की जा रही थीं। आयोजन के दौरान पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी अभियान का संदेश भी दिया गया। जगह-जगह योगाभ्यास और बांसुरी वादन ने

माहौल को और भव्य बना दिया। पथ संचलन के मार्ग पर नागरिकों ने मंच बनाकर स्वयंसेवकों का स्वागत किया। शहर के प्रमुख क्षेत्रों एरोड्रम, तिलक पथ, विजयनगर और क्लर्क कॉलोनी में आकर्षक रंगोलियां और संघ के शताब्दी वर्ष के प्रतीक बनाए गए। पूरे शहर ने इसे राष्ट्रभक्ति और संस्कृति का उत्सव बताया। संघ के अनुशासन, एकता और सेवा भावना ने रविवार को इंदौर की जमीन को संघमय बना दिया।

युवक ने नाबालिग को परेशान किया

इंदौर। दूसरे वर्ग के युवक ने नाबालिग छात्रा को झांसे में लेकर उसका शोषण किया। छात्रा हरदा की रहने वाली है और वहां पर उसके साथ युवक ने संबंध बनाए थे, बाद में छात्रा का परिवार इंदौर शिफ्ट हो गया, फिर भी आरोपी ने पीछा नहीं छोड़ा और परेशान करने लगा। इस मामले में परिजनों ने बजरंग दल कार्यकताओं को जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, 3 अक्टूबर को स्कीम नं. 78 पानी की टंकी के पीछे छात्रा को युवक ने मिलने बुलाया और वहां भी हरकत करने लगा। इसकी जानकारी बजरंगियों को दे दी गई थी, मौके पर ही बजरंग दल कार्यकर्ता पहुंचे और आरोपी को पुलिस के हवाले किया।

बात करना बंद की, तो धमकी दी

इंदौर। बातचीत बंद करने पर आरोपी ने नाबालिग को फोटो वायरल करने और मुंह पर ब्लेड मारकर जान से खत्म करने की धमकी देने लगा। राऊ पुलिस को पीड़िता ने बताया कि आरोपी और मैं अच्छे दोस्त होकर एक दूसरे को पसंद करने लगे। कुछ दिन आरोपी का व्यवहार ठीक नहीं होने से हम दोनों में झगड़ा होने लगा। मैंने उससे बात करना बंद दिया। उसके बाद आरोपी मुझे रोजाना फोन करके परेशान करता है और बात करने के लिए दबाव बनाता है। 26 सितंबर को मुझे फोन करके धमकी देने लगा की अगर तुने मुझसे बात नहीं की तो हम दोनों के साथ में खींचे फोटो वायरल कर दूंगा।

ज्वेलरी हड़पकर बेचने का मामला

इंदौर। आरोपी दंपति द्वारा धोखा देकर रुपए और ज्वेलरी हड़पकर बेचने का मामला सामने आया है। फरियादी पक्ष को आरोपियों ने हाथ-पैर तोड़ने की धमकी भी दी। चंदन नगर पुलिस ने फरियादी सुनीता पति नरेन्द्र पटेल निवासी झालाराम नगर की शिकायत पर आरोपी हेमलता पति जितेन्द्र प्रजापत और जितेन्द्र प्रजापत निवासी गंगा कॉलोनी पर केस दर्ज किया है। जांच के दौरान आवेदिका सुनीता और अन्य साक्षीगण ज्योति बारिया,पंडित विजय, भूपेन्द्र बड़ोदिया, शुभम के कथन लिए गए। सभी ने अपने कथन में कहा कि आरोपी हेमलता ने हमें विश्वास में लेकर बेईमानी के आशय से रुपए ज्वेलरी हड़प ली।

विवाद के बाद गाड़ी के कांच फोड़े

इंदौर। कार हटाने की बात पर हुए विवाद के चलते आरोपियों ने युवक की पिटाई कर कार के कांच भी फोड़ दिए। घटना इंद्रपुरी कालोनी के पास की हैं। भंवरकुआ पुलिस ने मामले में जबलपुर के रहने वाले चिन्मय पिता मुकेश दुबे हाल निवासी भोलाराम उस्ताद मार्ग की शिकायत पर कृष्ण, सुनील,आदर्श, हरिओम और ध्रुव के खिलाफ केस दर्ज किया गया। फरियादी ने बताया कि आरोपियों ने गाड़ी निकालने की बात पर डंडे, हाथ-मुक्कों से मारपीट की।

युवक से एमडी ड्रग मिली, गिरफ्तार किया

पुलिस आयुक्त की नारकोटिक्स विरोधी मुहिम के तहत क्राइम ब्रांच ने फिर एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। मंगलवार को एमआर-4 रोड स्थित रेलवे सिग्नल ऑफिस के पास गश्त के दौरान टीम ने सफेद एक्टिवा पर संदिग्ध अवस्था में बैठे एक युवक को घेराबंदी कर पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना नाम चिराग कुशवाह निवासी द्वारिकापुरी बताया।

तलाशी लेने पर उसके पिट्ठू बैग से 10.10 ग्राम अवैध मादक पदार्थ 'एमडी' बरामद हुआ, जिसकी अंतरराष्ट्रीय कीमत लगभग 1 लाख 10 हजार रुपये आंकी गई है। आरोपी ने स्वीकार किया कि वह स्वयं नशे का आदी है और सस्ते दामों में ड्रग खरीदकर शहर में ज्यादा कीमत पर बेचता था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/22 के तहत मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है। लगातार हो रही कार्रवाई से स्पष्ट है कि क्राइम ब्रांच ने नशे के सौदागरों पर शिकंजा कस दिया है।

जुए के अड्डे पर दबिश के बाद वहां जुआरी की लाश मिली, जांच जारी

इंदौर। ग्रामीण इलाके हरसोला में जुए के अड्डे पर पुलिस की रात में हुई दबिश के बाद एक जुआरी की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। मृतक की पहचान खरगोन जिले के निवासी भारत सिंह के रूप में हुई है। उसकी मौत कैसे हुई, इसका खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही हो पाएगा। फिलहाल पुलिस ने मामला जांच में लिया है और एफएसएल टीम भी मौके पर पहुंच गई है।

जानकारी के अनुसार, हरसोला क्षेत्र में कई दिनों से जुए का अड्डा चलने की सूचना पुलिस को मिल रही थी। इसी सूचना पर रात को पुलिस टीम ने खेत में बने जुए के ठिकाने पर दबिश दी। पुलिस ने चारों ओर से घेराबंदी की, लेकिन अंधेरा होने का फायदा उठाकर करीब 40 से 50 जुआरी मौके से भाग निकले। बताया जा रहा है कि इन्हीं में से एक भारतसिंह था, जिसकी लाश सुबह खेत के पास मिली।

स्थानीय ग्रामीणों ने शव देखकर पुलिस को सूचना दी। शव को पोस्टमार्टम के लिए महू के मध्य भारत अस्पताल भेजा गया है। प्रारंभिक आशंका है कि भारत सिंह को भागते समय हार्ट अटैक आया होगा या वह खुले बिजली के तार की चपेट में आ गया होगा। पुलिस अधिकारी अब यह भी जांच कर रहे हैं कि वह खरगोन से इंदौर जिले में जुआ खेलने कैसे पहुंचा। मामले की गंभीरता को देखते हुए एफएसएल की टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए हैं, जबकि पुलिस अन्य जुआरियों की तलाश में जुटी है।

ड्रग पैडलर का अपहरण कर पेड़ से बांधा, पैसे छीने, लेन-देन का विवाद

इंदौर। ड्रग्स माफिया सीमा नाथ के भाईयों ने एक पैडलर का अपहरण कर लिया। उसे पेड़ से बांधा और जमकर पीटा। आरोपियों ने ड्रग्स बेचने की धमकी दी और रुपए भी छीन लिए। डीसीपी ने व्यावसायिक विवाद बताया है। चारों आरोपियों को पकड़ लिया। एक करोड़ के ड्रग्स और 48 लाख रुपयों के साथ पकड़ी गई थी। यह घटना द्वारकापुरी थाना अंतर्गत अहिरखेड़ी की है। श्रीराम नगर निवासी 34 वर्षीय कुणाल पुत्र गोपाल चौहान ने सीमा नाथ के भाई अर्जुन नाथ, चेतन नाथ, लक्की नाथ और समीर नाथ के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई है। कुणाल ने पुलिस को बताया कि वह गुरुवार को भंडारे में खाना खाने जा रहा था। आरोपियों ने रास्ते में पकड़ लिया और दोपहिया वाहन से श्मशान के समीप ले गए। एक पेड़ पर बांध कर पीटा और उससे 2 हजार रुपये छीन लिए। 1800 रुपये खाते में ऑनलाइन ट्रांसफर करवा लिए। शनिवार को इस घटना की रिपोर्ट लिखी गई।

सूत्रों के मुताबिक अपहरण ड्रग्स के धंधे को लेकर हुआ है। सीमा नाथ अहिरखेड़ी, प्रजापत नगर, द्वारकापुरी, ऋषि पैलेस, राजेंद्र नगर, कुंदन नगर क्षेत्र में ड्रग्स (ब्राउन शुगर) की सप्लाई करती है। सीमा की गिरफ्तारी के बाद चेतन, लक्की और अर्जुन ड्रग्स का धंधा कर रहे है। तीनों ही आपराधिक प्रवृति के है। चेतन किराना कारोबारी की हत्या कर चुका है। आरोपियों ने कुणाल से कहा कि वह क्षेत्र में दूसरे की ड्रग्स बेचता है। उससे कहा कि इस क्षेत्र में उनसे ही ड्रग्स खरीदना पड़ेगी। पुलिस के अनुसार आरोपियों से पूछताछ चल रही है।

नो पार्किंग में खड़े किए वाहनों पर ट्रैफिक पुलिस की सख्त कार्रवाई

5 बसों पर कार्रवाई कर 10 हजार रूपए का जुर्माना वसूला

इंदौर। ट्रैफिक पुलिस की व्हाट्सएप हेल्पलाइन पर जिम्मेदार नागरिकों द्वारा आरएनटी मार्ग और पटेल ब्रिज क्षेत्र में नो पार्किंग में खड़े वाहनों की शिकायत की गई थी। इन पर कार्रवाई की गई। इसके अलावा सयाजी होटल के पीछे स्थित मुक्तिधाम मार्ग पर नो पार्किंग क्षेत्र में खड़ी 5 बसों पर कार्रवाई कर 10 हजार का जुर्माना वसूला गया।

शिकायत मिलते ही सहायक पुलिस आयुक्त (यातायात) हिंदू सिंह मुवेल ने तुरंत क्रेन-सपोर्ट टीम को मौके पर भेजने के निर्देश दिए। टीम ने मौके पर पहुंचकर माइक से अनाउंसमेंट करते हुए क्षेत्र में भ्रमण किया और सभी अवैध रूप से खड़े वाहनों को हटवाया। ट्रैफिक पुलिस ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे नो पार्किंग क्षेत्र में अपने वाहन खड़े न करें और यातायात व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस का सहयोग करें। इस तरह की सक्रियता से शहर की ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद मिल रही है। बता दें, पुलिस द्वारा जारी की गई हेल्पलाइन में लगातार शिकायतें आ रही है। अधिकांश शिकायतों का तत्काल निराकरण किया जा रहा है। 16 सितम्बर से अब तक ट्रैफिक पुलिस 80 से अधिक शिकायतों का निराकरण कर चुकी है। शेष बची शिकायतों का जल्द निवारण किया जाएगा।

पांच बसों पर कार्रवाई

शहर में ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर और सुचारू बनाने के लिए यातायात पुलिस लगातार सख्त कार्रवाई कर रही है। शनिवार को सहायक पुलिस आयुक्त मनोज कुमार खत्री के निर्देशन में सयाजी होटल के पीछे स्थित मुक्तिधाम मार्ग पर नो पार्किंग क्षेत्र में खड़ी 5 बसों पर कार्रवाई करते हुए 10,000 का जुर्माना वसूला। कार्रवाई का नेतृत्व सूबेदार काजिम हुसैन रिजवी और उनकी टीम ने किया। ट्रैफिक पुलिस ने क्रेन की सहायता से बसों और अन्य अवैध रूप से खड़े वाहनों को हटाया और वहां मौजूद वाहन चालकों को माइक से अनाउंसमेंट कर समझाइश दी गई कि वे नो पार्किंग जोन में वाहन न खड़ा करें। पुलिस अधिकारियों ने चेतावनी दी कि यदि दोबारा इस क्षेत्र में वाहन खड़े किए गए तो प्रत्येक वाहन पर 5,000 का जुर्माना लगाया जाएगा और और भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। बताया गया कि यह क्षेत्र रिहायशी परिसर और मुख्य मार्ग से जुड़ा होने के कारण यहां बार-बार ट्रैफिक बाधित होता है, जिससे आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ता है। अधिकारी ने साफ शब्दों में कहा कि नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों पर कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। कार्रवाई के बाद भी बस मालिक नहीं माने तो बसें जब्त की जाएगी।

साइबर ठगों ने रिटायर्ड टीचर से 14 महीने में एलआईसी के नाम पर 97 लाख रू ठगे

इंदौर। रिटायर्ड शिक्षिका से साइबर अपराधियों ने 96 लाख 83 हजार 595 रुपये की ठगी की। वह 14 महीनों तक ठगों के संपर्क में रही और उनके इशारों पर खातों में राशि जमा कराती रहीं। पुलिस ने शुक्रवार रात अज्ञात साइबर ठग के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ठग के सभी खाते फर्जी पाए गए हैं। सिम कार्ड भी दूसरों के नाम से मिले हैं। ठगी जूना रिसाला निवासी कुमारी पुष्पा ठाकुर के साथ हुई है। 67 वर्षीय पुष्पा सेवानिवृत्त सहायक प्राध्यापक हैं। शिकायत में बताया कि 16 दिसंबर 2023 को राजीव शर्मा नामक व्यक्ति का कॉल आया था। उसने खुद को बीमा कंपनी का अधिकारी बताया और पुष्पा को दो बीमा पॉलिसी की जानकारी दी। उसने कहा कि एक पॉलिसी चालू है और दूसरी सरेंडर नहीं हुई है। एक लाख रुपये की राशि एनईएफटी कर दें, ताकि पॉलिसी की सरेंडर राशि खाते में ट्रांसफर कर दी जाएगी।

आरोपी ने बाकायदा ई-मेल आईडी भेजी और महिला से दस्तावेज भी मंगा लिए। आरोपी ने 7 फरवरी 2025 तक महिला से 96 लाख 83 हजार 595 रुपये जमा करवा लिए। ठग ने पॉलिसी बताकर ठगा महिला ने पुलिस को बताया कि उसने एसबीआई लाइफ से बीमा पॉलिसी ली थी। तीन साल तक 25 हजार रुपये जमा करती थी। बीच में रुपये जमा करना बंद कर दिए। कंपनी के कर्मचारी ने पॉलिसी सरेंडर करने की सलाह दी और 72 हजार रुपये मिले। मार्च 2020 में महिला ने 10 वर्ष के लिए दूसरी पॉलिसी ले ली।

16 दिसंबर 2023 को ठग का कॉल आया और कहा कि पॉलिसी सरेंडर नहीं हुई है। उसमें लाखों रुपये जमा हैं। शक है बीमा कंपनी से ही ग्राहकों के डेटा लीक हो रहा है। गिरोह ने 23 बार में 32 खातों में जमा करवा रुपये एडिशनल डीसीपी (अपराध) राजेश दंडोतिया के अनुसार, ठगी का शिकार हुई महिला ने आरोपियों में राजीव शर्मा, अमित शर्मा, आर. गोस्वामी, एसके अहलुवालिया, सुब्रत बास, गुरमीत सिंह चंद्रा के नाम बताए हैं। ठग इनके नाम से ही कॉल लगाते थे। आरोपियों ने 23 बार में 32 खातों में रुपये ट्रांसफर करवाए हैं। 15 लाख 46 हजार तो बैंक ऑफ बड़ौदा के खाते से ट्रांसफर किए गए हैं।

ब्राउन शुगर का तस्कर पकड़ाया

इंदौर। अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत क्राइम ब्रांच इंदौर को बड़ी सफलता हाथ लगी है। 23 ग्राम ब्राउन शुगर प्रकरण 8/21 एनडीपीएस एक्ट) में फरार चल रहा आरोपी अकरम खान निवासी निंबाहेड़ा, राजस्थान को पुलिस ने दबोच लिया। आरोपी को मुखबिर की सूचना तथा तकनीकी विश्लेषण के आधार पर निंबाहेड़ा से गिरफ्तार किया गया।

गौरतलब है कि इस मामले में इससे पहले दो आरोपी 23 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार हो चुके हैं। पूछताछ में अकरम ने तस्करी में शामिल होने की बात स्वीकार की। उसने बताया कि वह राजस्थान से सस्ते दामों में ब्राउन शुगर लाकर इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में महंगे दामों पर सप्लाई करता था। शुरुआती जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी के खिलाफ राजस्थान में पहले से तीन आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह के निर्देश पर क्राइम ब्रांच लगातार नशा तस्करों के नेटवर्क पर कड़ी निगरानी रख रही है। आरोपी को इंदौर लाकर अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे पुलिस रिमांड पर लिया गया है। अब उसके संपर्कों व सप्लाई चैन की गहराई से जांच की जा रही है।

पुलिस की ड्रिंक एंड ड्राइव में कार्रवाई, नशेड़ी चालक के दोस्तों पर भी मामले

कार में बैठे युवकों पर भी सख्त कार्रवाई, उन्हें भी जेल भेजा जाएगा

इंदौर। रिंग रोड पर हाल ही में हुए दर्दनाक हादसे के बाद पुलिस ने ड्रिंक एंड ड्राइव मामलों में अब तक की सबसे सख्त कार्रवाई का फैसला किया है। ड्राइवर के साथ ही उसके साथ कार में सवार तीन दोस्तों को भी आरोपी बनाने की तैयारी की गई है।

भंवरकुआं इलाके में 26 सितंबर की रात करीब 3.30 बजे तेज रफ्तार कार ने लॉ के छात्र आशुतोष शर्मा को पीछे से टक्कर मार दी थी। हादसे में आशुतोष की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस जांच में पता चला कि कार नशे में धुत आशाराम नामक युवक कार चला रहा था। उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है, लेकिन इस बार पुलिस ने न केवल ड्राइवर पर ही कार्रवाई की है, बल्कि उसके साथ कार में सवार तीन दोस्तों को भी आरोपी बनाने की तैयारी कर ली है।

सीसीटीवी फुटेज में साफ देखा गया कि आशुतोष अपनी लेन में बाइक से जा रहा था। तभी पीछे से आई कार ने उसे जबरदस्त टक्कर मारी और बाइक समेत कई फीट तक घसीटते हुए ले गई। टक्कर के बाद भी कार नहीं रुकी। कार में बैठे तीन युवकों ने भी कोई मदद नहीं की और घटनास्थल से भाग निकले। थाना प्रभारी राजकुमार यादव ने बताया कि ड्राइवर आशाराम ने सिर्फ एक साथी का नाम बताया है। बाकी दो युवक उसके दोस्त के दोस्त थे, इसलिए उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दे सका। फिलहाल पुलिस उस फरार युवक की तलाश कर रही है, जिसके पकड़े जाने पर बाकी दो का भी सुराग मिल सकेगा। पुलिस का कहना है कि अब कार में बैठे बाकी युवकों पर भी सख्त धाराओं में कार्रवाई की जाएगी और उन्हें भी जेल भेजा जाएगा। यह कदम इसलिए उठाया जा रहा है ताकि भविष्य में गाड़ी में बैठने वाले लोग ड्राइवर को रोकने की जिम्मेदारी निभाएं, खासकर जब वह नशे में हो।

नशे में ड्राइविंग के आंकड़े - पिछले 15 दिन में पुलिस ने 14 ऐसे बड़े वाहन पकड़े हैं जो नो-एंट्री में जा रहे थे और सभी के ड्राइवर नशे में पाए गए। 16 से 30 सितंबर के बीच 439 वाहनों को नो-एंट्री में पकड़ा गया। वर्ष 2024 में अब तक 1800 से ज्यादा लोग नशे में गाड़ी चलाते पकड़े जा चुके हैं। इनमें से 250 से ज्यादा सड़क हादसे शराब पीकर गाड़ी चलाने की वजह से हुए, जिनमें 85 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हुए।

भाजपा पार्षद के भतीजे को गांजा तस्करी कांड में गिरफ्तार किया

पूर्व आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने कार्रवाई की

इंदौर। शहर में गांजा तस्करी के एक मामले में पुलिस ने भाजपा पार्षद के भतीजे गौरव यादव को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई पहले से पकड़े गए आरोपी की निशानदेही पर की गई। गौरव यादव से फिलहाल पुलिस पूछताछ कर रही है।

डीसीपी राजेश व्यास ने बताया कि 15 सितंबर को थाना बाणगंगा की भागीरथपुरा चौकी क्षेत्र से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया था, जिसके पास से करीब डेढ़ किलो गांजा बरामद हुआ था। पूछताछ के दौरान आरोपी ने गांजे के स्रोत और आपूर्ति श्रृंखला के बारे में जो जानकारी दी,उसके आधार पर गौरव यादव का नाम सामने आया। पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों और बयान के आधार पर गौरव यादव को परसों रात हिरासत में लिया। हालांकि उसके पास से कोई मादक पदार्थ जब्त नहीं हुआ है। पुलिस अब आरोपी से तस्करी

नेटवर्क और अन्य संलिप्त लोगों के संबंध में पूछताछ कर रही है। मामले में जांच जारी है और पुलिस अन्य संभावित आरोपियों की तलाश में छापामार कार्रवाई कर रही है।

तस्कर पकड़ाया

थाना बेटमा पुलिस ने नशे के अवैध व्यापार पर बड़ी कार्रवाई करते हुए गांजा तस्करी में लिप्त एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी बाबूलाल पिता रामचंद्र मकवाना (निवासी ग्राम अजंदा) के कब्जे से 5 किलो 83 ग्राम अवैध गांजा बरामद किया, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 40,500 रुपए बताई गई है। थाना प्रभारी निरीक्षक मीना कर्णावत के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम अजंदा रोड पर देर रात दबिश दी और आरोपी को पकड़ा। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/20 के तहत मामला दर्ज कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है। थाना प्रभारी मीना कर्णावत ने कहा कि क्षेत्र में नशे के अवैध कारोबार को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस अभियान में उपनिरीक्षक संदीप पोरवाल, एएसआई गजेंद्र चौहान सहित पुलिस टीम का सराहनीय योगदान रहा। कार्रवाई से इलाके में नशा कारोबारियों में हड़कंप मच गया है।

बिना नंबर की कार, डोंगल कॉल कच्चे रास्तों से चोरी की वारदात

इंदौर पुलिस ने दबोचा अंतरराज्यीय शातिर नकबजन गिरोह

इंदौर। हाईटेक तकनीक का इस्तेमाल कर पुलिस को चकमा देने वाला अंतर्राज्यीय नकबजन गिरोह आखिरकार इंदौर पुलिस के हत्थे चढ़ गया। थाना कनाडिया पुलिस ने राजस्थान के कोटपूतली निवासी आरोपी नरेश यादव को गिरफ्तार किया है, जो हरियाणा निवासी सतपाल फौजी गिरोह का सक्रिय सदस्य बताया जा रहा है।

बताया गया कि उसे पुलिस ने लगातार 12 दिनों की निगरानी और ट्रैकिंग के बाद पकड़ा। यह गिरोह बिना नंबर की आई10 निओस कार से विभिन्न राज्यों में चोरी करने निकलता था। आरोपी टोल प्लाजा से बचने के लिए कच्चे रास्तों और गांवों के रास्ते से यात्रा करता था, ताकि उसकी गाड़ी किसी सीसीटीवी में कैद न हो। इतना ही नहीं, वह

मोबाइल सिम की बजाय डोंगल से इंटरनेट चलाकर वाट्सएप कॉल करता था ताकि उसकी लोकेशन ट्रेस न हो सके। गूगल मेप की मदद से आरोपी पहले पॉश और सुनसान कॉलोनियों की रेकी करता और फिर लॉक फ्लैट्स को निशाना बनाता। इंदौर में उसने पिछले तीन महीनों में मानवता नगर,आलोक नगर, बिचोली मर्दाना और संपत हिल्स क्षेत्रों में चार बड़ी चोरी की वारदात कीं।

पुलिस ने आरोपी के पास से करीब 36 लाख रुपये का माल बरामद किया है,जिसमें सोने-चांदी के जेवर, मोबाइल, नगद और एक क्रेटा कार शामिल है। आरोपी ने चोरी की रकम से यह कार खरीदी थी। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने इस सराहनीय कार्रवाई के लिए थाना प्रभारी डॉ. सहर्ष यादव और टीम की प्रशंसा की है। आरोपी का साथी परमिंदर तंवर(भिवाड़ी, हरियाणा) अभी फरार है, जिसकी तलाश जारी है।

संपादकीय

अब कप्तानी शुभमन के हाथ!

बदलाव प्रकृति का नियम है और यह होते भी रहना चाहिए। फिर भी चयनकर्ताओं द्वारा भारतीय क्रिकेटर शुभमन गिल को रोहित शर्मा की जगह भारतीय वन डे टीम का कप्तान घोषित किए जाने पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई है। रोहित के फैन इस बदलाव को पचा नहीं पा रहे हैं। जबकि शुभमन गिल ने कहा कि वो नई जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाएंगे। बताया जाता है कि यह फैसला आने वाले 2027 वर्ल्ड कप को ध्यान में रखकर लिया गया है। गिल को कप्तानी सिर्फ वनडे विश्व कप 2027 को देखते हुए नहीं सौंपी गई है, बल्कि लंबी अवधि के लिए है। अगरकर ने तर्क दिया कि गिल को कप्तान बनाने के पीछे एक मुख्य कारण यह था कि सभी प्रारूपों में स्थिरता बनी रहे और तीन अलग-अलग कप्तान न हों। मुख्य चयनकर्ता (पुरूष) अजीत आगरकर ने पत्रकार वार्ता में कहा कि ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल होंगे। अब, तीनों प्रारूपों में तीन अलग-अलग कप्तान रखना व्यावहारिक रूप से असंभव है। किसी न किसी स्तर पर हमें अगले विश्व कप की ओर देखना शुरू करना होगा और अगले कप्तान को तैयारी के लिए कम से कम कुछ समय देना होगा। उधर भारत के लीजेंड क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने भी कहा कि अब गिल ही तीनों फार्मेट में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान होंगे। 25 वर्षीय गिल ने सफल टेस्ट कप्तानी के बाद वनडे के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। उन्हें 19-25 अक्टूबर के बीच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली जाने वाली वनडे सीरीज के लिए भारतीय टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है जबकि श्रेयस अय्यर को उपकप्तानी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वैसे पूर्व कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली वन डे टीम में खेलते रहेंगे। रोहित की कप्तानी से विदाई ने टीम के कुछ खिलाड़ियों को भावुक जरूर कर दिया। जहां तक रोहित शर्मा की कप्तानी की बात है तो उनका कार्यकाल उपलब्धियों से भरा रहा है। उनकी कप्तानी उनके खेल की तरह ही आक्रामक रही। उनकी अगुवाई में भारत ने 2024 में टी20 वर्ल्ड कप और 2025 में चैंपियंस ट्रॉफी अपने नाम की। इसके अलावा 2023 वनडे वर्ल्ड कप में टीम ने फाइनल तक शानदार अपराजित सफर तय किया, जहां बस एक मैच की दूरी रह गई थी ट्रॉफी से। भारत ने इन तीनों बैक टू बैक आईसीसी टूर्नामेंट्स में सिर्फ एक मैच गंवाया और वह रहा 2023 वनडे विश्व कप का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फाइनल। आंकड़ों की बात करें तो रोहित ने 56 वनडे मैचों में से 42 में जीत हासिल की। यानी लगभग 76 प्रतिशत का जीत प्रतिशत, जो भारतीय क्रिकेट के इतिहास में सबसे बेहतरीन में गिना जाता है। क्रिकेटर दिनेश कार्तिक ने कहा कि रोहित ने सिर्फ ट्रॉफियां नहीं जीतीं, बल्कि हमारी पीढ़ी को यह सिखाया कि जीतने का जज्बा क्या होता है। हिटमैन का अध्याय चाहे कप्तानी से खत्म हो गया हो, लेकिन उनकी कहानी भारतीय क्रिकेट की आत्मा में हमेशा जिंदा रहेगी। उल्लेखनीय है कि रोहित के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद गिल को ही लाल गेंद के प्रारूप की कप्तानी सौंपी गई थी। नए कप्तान शुभमन के सामने यह चुनौती होगी कि वो रोहित की विरासत को आगे कैसे बढ़ाएं। वैसे कप्तान बनते ही शुभमन गिल ने साफ कर दिया है कि उनका सबसे बड़ा लक्ष्य 2027 वनडे विश्व कप है, जो दक्षिण अफ्रीका में खेला जाएगा। शुभमन एक कप्तान और बेहतरीन आरंभिक बल्लेबाज के रूप में अपनी भूमिका कैसे निभाते हैं, यह देखने की बात है। अक्सर कप्तानी का दबाव खिलाड़ी को अपना स्वाभाविक खेल खेलने से रोकता है, उम्मीद है कि शुभमन दोनो मोर्चों पर कामयाब होंगे।

नजरिया

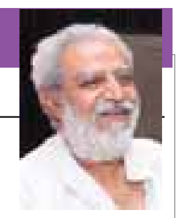

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

गांधी में ही है ट्रंप टैरिफ से सुरक्षा

अमेरिका और ट्रंप की नाराजगी की वजह रूस के साथ सस्ते तेल के सौदे को लेकर ज्यादा है। अमेरिका यह मानता है कि रूस के ऊपर लगाये गये आर्थिक प्रतिबंध इसलिये सफल नहीं हो पा रहे हैं क्योंकि भारत के द्वारा सस्ती दरों के कारण अपनी जरूरत से ज्यादा तेल खरीदा जा रहा है, जो रूसी अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है और उसका परिणाम रूस के यूक्रेन पर थोपे गये युद्ध की वृद्धि में है। अमेरिकी राष्ट्रपति के एक प्रवक्ता पीटर नवारो ने इस प्रकार के बयान सार्वजनिक रूप से भी दिये हैं। पीटर नवारो की भारत के खिलाफ बयानबाजी खुलकर हो रही है और भारत की ओर से उसका उत्तर सरकार की ओर से सरकार के बजाय भारत का मीडिया दे रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कई देशों पर टैरिफ बढ़ाया है, परंतु भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ और 25 प्रतिशत पैनाल्टी यानि कुल मिलाकर 50 प्रतिशत बढ़ाया है। फिर कुछ दिन बाद भारत में निर्मित दवाओं पर शुल्क बढ़ा दिया है, इससे भारत के अमेरिका के निर्यात पर असर पड़ना स्वाभाविक है। एक देश के रूप में हमें ट्रंप के इस टैरिफ ब्लैकमेलिंग का मुकाबला करना एक अनिवार्य लाचारी है। ट्रंप के बयानों से यह स्पष्ट है कि ट्रंप का टैरिफभारतीय विदेश नीति को अपने अनुकूल करने के लिए एक हथियार जैसा रहा है।

आरंभ में ट्रंप ने अपनी भाषा को भी लगभग असभ्यता की सीमा तक पहुँचाया। जिनसे ट्रंप की छवि सारी दुनिया में एक अस्थिर व्यक्ति की बन गई। भारतीय मीडिया ने भी विशेषत: मुख्यधारा का होने का दावा करने वाले मीडिया ने ऐसी खबरें छापना शुरू किया है जैसे अमेरिका भारत के समक्ष शरणागत हो गया है, यह भी समाचार छपे हैं कि ट्रंप ने श्री नरेन्द्र मोदी से नोबल प्राइज के लिये समर्थन मांगा था जिससे उन्होंने इंकार कर दिया और इसलिये ट्रंप ने टैरिफ लगाया। यद्यपि इस संबंध में भारत के प्रधानमंत्री ने खंडन नहीं किया। 31 अगस्त को प्रधानमंत्री जी के चीन यात्रा के बाद ऐसे भी समाचार आये हैं कि श्री नरेन्द्र मोदी को चीन के समिट में, चीन के राष्ट्रपति श्री जेनपिन, और रूसी राष्ट्रपति पुतिन के बराबर राज सम्मान मिला है। अगर यह सही है तो एक भारतीय होने के नाते मुझे प्रसन्नता हुई। हालाँकि भारत व चीन की मित्रता कितने दिन की और कितनी कारगर होगी यह कहना कठिन होगा? अभी भारत का चीन को निर्यात लगभग 1.25 लाख करोड़ का है और चीन से आयात लगभग 9.50 लाख करोड़ का है याने आयात की तुलना में निर्यात 1.6 है। और इस दोस्ताने के बाद चीन का निर्यात और अधिक बढ़ेगा।

सूचना ये भी है कि भारत और अमेरिका के बीच टैरिफ संबंधित वार्तालाप जारी है और शीघ्र कुछ हल निकलने की संभावना है। यह हल निकले ऐसा सभी चाहते हैं। भले ही भारत के मीडिया में यह कहा जाये कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह कहना भी कुछ अतिरेकी लगता है। भारत के और विशेषता गुजरात सूरत के जेम्स ज्वैलरी से निर्यात बहुत घटा है और भारत के उद्योगजगत ने सरकार से यह मांग की है कि उन्हें कोरोना काल के समान मदद दी जाये। यह भी जानकारी मिली है सरकार अभी तक रु 25 हजार करोड़ का पैकेज दे चुकी है और लगभग 8 वर्ष के बाद भारत सरकार ने जो जीएसटी स्लैब बदला है, यह भी बाजार के ऊपर ट्रंप टैरिफ के असर को कम करने और बाजार को मदद पहुँचाने का रास्ता है। जीएसटी कम होने से उपभोक्ताओं की खरीदारी बढ़ेगी, क्योंकि उन्हें सस्ता माल मिलेगा और अमेरिका को निर्यात करने की वजह से जो कमी आई है उसका कुछ अंश पूरा हो सकेगा। यह सरकार का सोचना है तथा सरकार समर्थक व्यापारी वर्ग नाराज नहीं होगा। हालाँकि सरकार ने इसे अपनी दयानतदारी बताने का प्रयास किया है जो देश में किसी को भी स्वीकार्य नहीं है। यह स्वाभाविक है कि टैरिफ वृद्धि जैसी घटनाओं से बाजार पर असर पड़ेगा। अमेरिका में इस टैरिफवृद्धि के बाद तीन प्रकार की प्रतिक्रियायें सामने आई हैं।

1. जो ट्रंप विरोधी प्रतिपक्ष है वह इसे ट्रंप की राजनैतिक भूल बता रहा है और भारत को रूस और चीन के नजदीक भेजने के लिये जिम्मेदार बता रहा है।
2. ट्रंप उनकी सलाहकार मंडली और हाल ही में जो बड़े उद्योगपति एलन मस्क को छोड़कर, टेक लीडर की मीटिंग ट्रंप ने की, उसमें अमेरिकी उद्योगजगत संतुष्ट नजर आया।
3. प्रतिक्रिया उन लोगों की भी है जो संख्या बल में बहुत कम है कि भारत के चीन और रूस के पास जाने से वैश्विक सत्ता संतुलन और अमेरिका की श्रेष्ठता की स्थिति में फर्क पड़ेगा।

अमेरिका और ट्रंप की नाराजगी की वजह रूस के साथ सस्ते तेल के सौदे को लेकर ज्यादा है। अमेरिका यह मानता है कि रूस के ऊपर लगाये गये आर्थिक प्रतिबंध इसलिये सफल नहीं हो पा रहे हैं क्योंकि भारत के द्वारा सस्ती दरों के कारण अपनी जरूरत से ज्यादा तेल खरीदा जा रहा है, जो रूसी अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है और उसका परिणाम रूस के यूक्रेन पर थोपे गये युद्ध की वृद्धि में है। अमेरिकी राष्ट्रपति के एक प्रवक्ता पीटर नवारो ने इस प्रकार के बयान सार्वजनिक रूप से भी दिये हैं। पीटर नवारो की भारत के खिलाफ बयानबाजी खुलकर हो रही है और भारत की ओर से उसका उत्तर सरकार की ओर से सरकार के बजाय भारत का मीडिया दे रहा है। इस टैरिफब्लैकमेलिंग अभियान के बाद जिस प्रकार का तख्ता पलट अचानक नेपाल में हुआ है, इंडोनेशिया में हुआ है वह अमेरिका की कमजोर स्थिति की द्योतक तो नहीं है बल्कि ऐसा लग रहा है कि अमेरिका के चीन को घेरने के प्रयास है। उनका भी कहीं न कहीं संबंध इन घटनाओं से है। हालाँकि अभी प्रमाणिक तौर पर कुछ कहना कठिन होगा। परंतु यह घटनायें सिद्ध कर रही हैं कि नेपाल, बंगलादेश और अब अमेरिका में भी भारत विरोधी विचार फैल रहा है। नेपाल के तथाकथित जेन जी आंदोलन के नौजवानों ने नये प्रधानमंत्री के चयन में भारत के साथ नजदीकी वाले नामों पर आपत्ति की और भारतीय उद्योगपति की संपत्ति को बड़े पैमाने पर जलाकर रख दिया। बंगलादेश में भी भारत विरोधी भावना पनप रही है या पनपाई जा रही है और अमेरिका में भी पिछले कुछ समय से भारतीयों पर हमले बढ़ रहे हैं तथा कई घटनाओं में घृणात्मक शब्दों का प्रयोग हुआ है। यह सीधी विदेश नीति का मामला तो नहीं है परंतु विदेश नीति को प्रभावित करने वाला मसला जरूर है। अमेरिका में ट्रंप सत्ता में है परंतु ट्रंपवाद, विवादित है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट और कई संवैधानिक संस्थायें ट्रंप के तरीकों और ट्रंप टैरिफ के पक्ष में नहीं है। ट्रंप के सपोर्टर चार्ली किर्क की हत्या के संकेत ट्रंप को भी चिंतित कर रहे हैं। जिस व्यक्ति ने किर्क की हत्या की है, उसने जो शब्द कहे 'फासिस्ट्', यह ट्रंप और उनके अनुयायियों के प्रति बढ़ती हुई घृणा का प्रतीक है।

हालाँकि अमेरिका में एक और नई घटना शुरू हुई है जो आरंभिक दौर में है कि वहाँ डेमोक्रेटिक पार्टी का हिस्सा यह मानने लगा है कि डेमोक्रेटिक पार्टी अब अस्तित्वहीन हो रही है। एक छोटे समूह का आकर्षण लोकतांत्रिक समाजवाद की तरफहो रहा है। अमेरिका जैसा पूंजीवादी देश में समाजवादी विचार का उदय एक अच्छा संकेत है। डॉ लोहिया जब अमेरिका के दौरे पर गये थे तब उन्होंने अमेरिकी सांसदों से चर्चा में कहा था कि आप लोगों के कुछ कार्य समाजवादी जैसे हैं, यद्यपि आप समाजवाद को स्वीकारते नहीं हैं। अगर इस वैश्विक घटनाक्रम की वजह से अमेरिका में समाजवाद का उदय हो सके तो वह दुनिया के लिये और विश्वशांति के लिये एक महत्वपूर्ण कदम होगा। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग इसे मेरा यूटोपिया होना बतायेंगे। परंतु किसी बड़े परिवर्तन के लिये एक बड़ा सपना होना जरूरी होता है। वह आरंभ में यूटोपिया जैसा ही होता है। भले ही वह किसी नाम से हो। एक जमाने में समाजवादियों ने कल्याणकारी राज्य के द्वारा जरूरतमंदों को मदद की बात उठाई थी। सन 1950-60 के दशक में समाजवादी लोग ही राज्य के द्वारा आम जनता को रियायतें देने की मांग करते थे। परंतु आज हिंदुस्तान का हर राजनैतिक दल चाहे वह समाजवाद का विरोधी ही क्यों न हो, जनता को रोटी, बिजली, पानी या अन्य प्रकार की रियायतें दे रहा है बल्कि अब तो रियायतों की होड़ इतनी बढ़ गई कि लगता है कि जैसे सरकारी या गैर सरकारी घोषित रियायतें वोट खरीदी का पर्याय बन गई हैं।

अब जो हम समाजवादी लोग कहते रहे कि श्यूज एंड थ्रोय कि सभ्यता पूँजीवाद को जन्म देती है और श्यूज एण्ड रीयूज्य याने उपयोग करो फैकों मत, सुधारो और पुन: उपयोग करो की सभ्यता समाजवादी विचार के लिये जरूरी है। जब आरंभ में हम लोग यूज एण्ड थ्रो के खिलाफ बोलते थे, तब पूँजीवादी तबका उसका मजाक उड़ाता था। हालांकि जब हम समाजवादी लोग यह कहते थे तो इसके कई पक्ष थे-

1. प्रकृति को अधिकतम बचाया जाये क्योंकि वस्तु का निर्माण अंततरू प्रकृति की कीमत पर ही होता है।
2. यूज एण्ड थ्रो पूंजीवाद और बाजार की शक्तियों की जीवनदायिनी अमृत होता है जो लगातार उत्पादन और विक्रय के नाम पर लूट और मुनाफाखोरी का स्थाई माध्यम होता है।
3. गैर जरूरी जरूरतों का बाजार निर्मित होता है जो उपभोक्ता को स्थाई ग्राहक बनाता है और यही पूँजीवाद को पनपने का आधार बनता है।
4. यूज एन्ड थ्रो-भारतीय संस्कृति व परंपराओं के विरुद्ध है।

यह भी आश्चर्यजनक और सुखद है कि अभी तक भारत में यह विचार नहीं फैल पाया, जबकि यह महात्मा गांधी और भारतीय संस्कृति का मूल विचार है। यह समाजवाद का भी मूल विचार रहा है कि जरूरत के अनुसार लें। अगर गांधी और लोहिया का यह विचार आज अमेरिका और यूरोप के संपन्न देशों में फैल रहा है तो यह एक सुखद घटना है और इस अर्थ में भी कि गांधी, लोहिया और समाजवाद शाश्वत विचार है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो अपने जीवन काल में ही अपने कार्यों और उदाहरण से प्रकृति के संरक्षण व न्यूनतम उपयोग का सिद्धांत दिया था। वे पेंसिल से लिखते थे, एक बार जब पेंसिल लिखते-लिखते घिसकर छोटी हो गई तो उनकी नातिन ने उसको हटाकर नई पेंसिल रख दी। बापू ने नई पेंसिल का इस्तेमाल नहीं किया और वही पेंसिल को वापिस बुलाया। उनके आश्रम में साबुन की जगह मिटटी का प्रयोग होता था और एक आश्रमवासी द्वारा मिटटी का बड़ा ढेला उठाकर लाने पर क्रोधित हुए। लाने वाले ने उन्हें बताया कि इसे रोजाना इस्तेमाल होना है इसलिये लाये हैं। पर गांधी ने उसे वापिस खेत में पहुँचाया और कहा कि जितनी जरूरत है उतना लाना है। इसी प्रकार गांधीजी तत्कालीन बंगाल नोआखाली में सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिये गांव-गांव घूम रहे थे तो दिनभर मिटटी और कीचड़ में चलना होता था। अगस्त माह बंगाल के लिये भारी बारिश का होता है। वे रात को जहाँ रुकते थे वहाँ एक पत्थर के टुकड़े से अपने पैर आदि साफकरते थे। एक दिन मनु गांधी पिछले ठिकाने पर वह पत्थर भूल आईं और जब महात्मा गांधी को अगले दिन रात में अपने ठहरने के स्थान पर पहुँचने पर वह पत्थर नहीं मिला तो उस अंधेरी रात में बावजूद इसके कि उनके साथ के सभी लोगों ने दूसरा पत्थर लाने के लिये कहा, परंतु गांधी ने वही पत्थर मनु गांधी को भेजकर वापिस मंगाया। इतना ही नहीं बल्कि उस हिंसा, सांप्रदायिकता और भयाभय वातावरण में उन्होंने मनु गांधी को अकेले भेजा। जब मनु गांधी पत्थर लेकर वापिस आई तो गांधी ने कहा कि यह सत्य की जीत है मेरे भी और तुम्हारे भी। दुनिया को प्रकृति को बचाने का और प्रकृति को क्षय से उत्पन्न हो रहे संकट को बचाने का इससे बड़ा और संकेत क्या हो सकता है।

ट्रंप का टैरिफ भारत को एक वरदान साबित हो सकता है, अगर भारत 'यूज एंड थ्रो' की संस्कृति को नकार दे, गांधी के रास्ते पर चलना शुरू करे, प्रकृति का दोहन व शोषण बंद करे, अपनी जरूरतों को सीमित करे तो गांधी और भारत जीतेगा, ट्रंप और पूँजीवाद हारेगा। सरकार को समझना चाहिये कि ट्रंपटैरिफसे, सुरक्षा चीन को बाजार खोलने से नहीं मिलेगी बल्कि महात्मा गांधी और लोहिया को स्वीकारने से मिलेगी।

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

सम्मान- कमजोरी नहीं, संस्कार की पहचान

समाज में एक बड़ी भूल यह है कि लोग अक्सर दूसरों द्वारा दिए गए सम्मान को हल्के में लेते हैं। कई बार किसी व्यक्ति की विनम्रता और आदरपूर्ण शब्दों को लोग उसकी कमजोरी मान लेते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि सम्मान देना कभी भी कमजोरी नहीं होता। यह उस व्यक्ति के संस्कारों की गहराई और उसके चरित्र की परिपक्वता को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति आपको 'सर', 'मैडम', 'भाईसाहब' या 'दीदी' जैसे आदरभरे शब्दों से पुकारता है, तो वह यह दिखाता है कि उसके भीतर दूसरों को मान देने की संस्कृति है। यह उसकी पारिवारिक परवरिश और जीवन मूल्यों की झलक है। मगर दुःख की बात यह है कि समाज में ऐसे लोग भी मिलते हैं जो इस आदर को समझने के बजाय उसका मज़ाक बना देते हैं।

एक और बड़ी समस्या यह है कि कई लोग दूसरों के सामने उस व्यक्ति को अनदेखा करते हैं जो उन्हें सम्मान देता है, लेकिन अकेले में उसी से प्रेम और अपनापन जताते हैं। यह दोहरा व्यवहार इस बात की पहचान है कि उनका हृदय छोटा है और उनके भीतर आत्मविश्वास की कमी है। दूसरों की नज़रों में 'कूल' दिखने या मज़ाक उड़ाने के लिए वे सार्वजनिक रूप से उसी सम्मानजनक शब्दों को बार-बार दोहराकर खिल्ली उड़ाते हैं। वास्तव में यह उनका परिचय है कि वे परिपक्व नहीं हैं और उनके अंदर वह विशालता नहीं है जो सम्मान स्वीकार कर सके। जो व्यक्ति दिल से किसी को सम्मान देता है, वह जब देखता है कि उसी सम्मान का उपयोग मज़ाक बनाने में हो रहा है, तो उसका हृदय गहराई से आहत होता है। वह यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि शायद उसकी आदर देने की आदत ही गलत थी।

दरअसल, सम्मान देना एक सुंदर भाव है, लेकिन जब वही सम्मान उपहास का कारण बन जाए तो देने वाले का विश्वास टूट जाता है। यह स्थिति अत्यंत दुखद है, क्योंकि समाज में वैसे भी सच्चा आदर देने वाले बहुत कम लोग बचे हैं।

यहां यह कहना भी उचित होगा कि कुछ गलती उस व्यक्ति की भी होती है जो बिना सोचे-समझे किसी को भी सम्मान देने लगता है। जैसे महंगी चीज़ हर किसी की पहुँच में नहीं होती, वैसे ही सम्मान भी हर किसी को नहीं देना चाहिए। सम्मान वही पात्र है जिसके पास उसे संभालने की क्षमता हो। यदि आप हर किसी को आदर देंगे, तो कई लोग उसकी कद्र नहीं करेंगे और आपको ही छोटा साबित करने में लग जाएंगे। इसलिए समझदारी यही है कि सम्मान वहाँ दें जहाँ वह वास्तव में योग्य हो और उसका मूल्य समझा जा सके।

सम्मान का असली सौंदर्य तभी है जब वह सच्चे मन से दिया जाए और उसी ईमानदारी से स्वीकार भी किया जाए। यह न तो लेन-देन की वस्तु है और न ही दिखावे का माध्यम। यह व्यक्ति के संस्कार, शिक्षा और मानसिकता का परिचायक है।

किसी को सम्मान देना आपके भीतर की विनम्रता और सभ्यता की सबसे बड़ी निशानी है। और यदि कोई इसका मज़ाक बनाता है, तो वास्तव में वह अपने छोटेपन का परिचय दे रहा है।

इसलिए हमें यह समझना चाहिए कि सम्मान देना कमजोरी नहीं है, बल्कि संस्कार है। दूसरों को नीचा दिखाने या आदर की खिल्ली उड़ाने से आप बड़े नहीं हो जाते, बल्कि अपना स्तर गिराते हैं। सच्चा इंसान वही है जो सम्मान को स्वीकार कर सके, उसे लौटाकर और गहरा बना सके। और सम्मान देने वाले को भी चाहिए कि वह सोच-समझकर सम्मान दे, क्योंकि यह भी एक अमूल्य धरोहर है जिसे हर कोई संभाल नहीं सकता।

आखिरकार, किसी की परवरिश और उसके संस्कार की सबसे सुंदर झलक उसके व्यवहार से दिखती है। और जो व्यक्ति दूसरों को आदर दे सकता है, वही जीवन के असली मायनों को समझता है।

देश सो नहीं पा रहा है...

व्यंग्य

सुधीर नायक

लेखक ट्रेड यूनियन लीडर हैं ।

अब देखो भैया,लोग कुछ भी कहें पर मेरे ख्याल से तो देश के सामने सबसे बड़ी समस्या सोने की है। देश सो नहीं पा रहा है। नींद पूरी नहीं हो पा रही है। देश दिनभर ऊंघता रहता है। देश को तो छोड़िए,मैं खुद नहीं सो पा रहा हूं। सर फटा जा रहा है। पिछले साल की बात है। मेरी ज़रा सी आंख लगती थी और न जाने कहां से आकर भैया जी खड़े हो जाते थे-अरे तुम सो रहे हो। जाग जाओ भाई। हद है,देश संकट में है और तुम्हें सोने की पड़ी है। मैं जाग गया। जागने के बाद मैंने कहा-भैयाजी,मैं जाग गया हूं। अब बताइए क्या करना है? देश का संकट कैसे दूर होगा?

भैया जी ने कहा-तुम्हें कुछ नहीं करना है। सब हो जायेगा। तुम तो बस मुझे वोट दे आओ। मुझे वोट देने से ही देश बचता है।मुझे तो किसी न किसी तरह देश बचाना था। मैं दौड़ता हुआ गया और वोट दे आया। वोट देकर मैं घर आया ही था कि भैया जी फिर आ गये। वे बोले-वोट दे दिया,अब तुम सो जाओ। मैं सोने की कोशिश कर रहा था। हल्की-सी झपकी आई थी कि कक्का जी आ गये। अरे तुम कमाल करते हो,तुम्हें शर्म नहीं आती। अपनी जाति संकट में है और तुम्हें सोना दिख रहा है।जाग जाओ भाई नहीं तो अपनी जाति नहीं बचेगी। जाति आखिरी सांसें ले रही है।बचा सको तो बचा लो। मैं हड़बड़ा कर उठा और मैंने कक्काजी से भी वही पूछा जो भैयाजी से पूछा था-क्या करना है? कहां चलना है? कक्काजी ने भी वही जबाव दिया-और कहीं नहीं चलना है। बस पोलिंग बूथ तक चलना है। चलकर मुझे वोट दे दो। बस,जाति बच जायेगी। जाति तुम्हारे वोट का ही इंतजार कर रही है। इस बार मैं कक्काजी को वोट डाल आया। वोट डालते देर नहीं हुई और कक्काजी मुझे लोरी सुनाने लगे।अब सो जाओ।बाकी मैं देख लूंगा।

मैंने कहा-कक्काजी अब मुझे नींद नहीं आ रही है।मेरी नींद उचट गयी है।कक्काजी घबरा गये।नहीं नहीं सोना तो पड़ेगा,बेटा।वोट देने के बाद सोना जरूरी होता है।नहीं तो,तबियत खराब हो जाती है। कक्काजी फटाफट नींद की गोली ले आये। लो, ये खा लो।अच्छी नींद आयेगी।मैं गोली खाकर लेटा ही था कि न जाने कितने लोगों ने मुझे घेर लिया।वे सब मुझे झकझोर रहे थे। उठो! उठो!! जागो!!!। अपना वर्ग खतरे में है,क्षेत्र खतरे में है,अपनी भाषा खतरे में है। मैं फिर उठ गया।तो भैया न तो मैं सो पा रहा हूं और न जाग पा रहा हूं। बस मैं ऊंघता रहता हूं। उबासियां लेता रहता हूं। मेरे जैसा हाल पूरे देश का है।इस देश में इतने सारे जगाने वाले और सुलाने वाले घूम रहे हैं कि कुछ पूछो मत। एक टोली सुलाकर जाती है कि दूसरी टोली जगाने आ जाती है।जिसे वोट दे दो वह सुलाने लगता है। जिसे वोट मिल चुके हैं उसे जागे हुए आदमी अच्छे नहीं लगते। वह पोलिंग बूथ से निकलते ही नींद की गोली थमा देता है।जाओ,अच्छे से सो जाना। दोबारा जब वोट का मौका आयेगा मैं फिर जगा लूंगा।और जिन्हें अभी वोट नहीं मिल पाये हैं वे सोने नहीं देते। पक्ष जगने नहीं देता और विपक्ष सोने नहीं देता।

आम आदमी अनारकली बना हुआ है।जाये तो जाये कहां? देश,धर्म,जाति,क्षेत्र,भाषा,संस्कृति-इस देश में सभी कुछ तो खतरे में हैं लेकिन बटन दबाने तक। एक बार बटन दबाने से एक खतरा दूर हो जाता है लेकिन दूसरा खतरा सर उठा लेता है। फिर जागना पड़ता है।अब आप ही बताइए हम कब सोयें और कब जागें।कुछ समझ में नहीं आता। सभी जगाने वाले एक ही बात कहते हैं कि जागकर मेरा वाला बटन दबा आओ। खबरदार,और कुछ नहीं करना है तुम्हें।बस,बटन भर दबाना है। और हां सुनो,बटन दबाने के बाद भी जागते मत रह जाना। फिर घर जाकर चुपचाप सो जाना।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कानून और न्याय

विनय झैलावत
(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

मध्य प्रदेश सरकार का आरक्षण कोटा बढ़ाने का बचाव

हाल ही में उच्चतम न्यायालय में एक याचिका के जरिए शिवम गौतम ने यह मुद्दा उठाया है कि किसी भी स्थिति में कोई भी आरक्षण का कुल गुणा भाग पचास प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता। यह उच्चतम न्यायालय द्वारा इंदिरा साहनी के मुकदमे में यही ठहराया गया था। लेकिन, मध्य प्रदेश के ओबीसी आयोग की वर्ष 2022 की एक अन्य रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि राज्य में अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। इस प्रकार, वंचित समुदाय सामूहिक रूप से राज्य की जनसंख्या का 87 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनाते हैं।

मध्य प्रदेश सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 27 प्रतिशत करने के अपने फैसले का पुरजोर बचाव किया। सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को बताया कि पिछड़े समुदाय सामूहिक रूप से राज्य की आबादी का 85 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा बनाता हैं। अपनी व्यापक जनसांख्यिकीय उपस्थिति के बावजूद यह वर्ग अपने अधिकारों से गंभीर रूप से वंचित हैं। अपने हलफनामे में राज्य ने 2011 की जनगणना का हवाला दिया। इसमें अनुसूचित जाति 15.6 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति 21.1 प्रतिशत और ओबीसी 51 प्रतिशत से ज्यादा आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। ओबीसी आयोग की 2022 की एक रिपोर्ट ने इस बात की पुष्टि की है कि अकेले ओबीसी राज्य की आधी से ज्यादा आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार, राज्य के अनुसार, वंचित समूह मिलकर मध्य प्रदेश की आबादी का 87 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा बनाते हैं।

सरकार ने कहा कि ओबीसी को पहले केवल 14 प्रतिशत आरक्षण तक सीमित रखा गया था। यह उनके जनसांख्यिकीय हिस्से के साथ-साथ उनके सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के लिए पूरी तरह से अनुपातहीन था। सरकार की ओर से तर्क दिया गया कि 27 प्रतिशत तक की वृद्धि न केवल उचित है, बल्कि एक संवैधानिक रूप से अनिवार्य सुधारात्मक कदम भी है। यह हलफनामा मध्य प्रदेश लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण) अधिनियम, 1994 की धारा 4 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं के जवाब में दायर किया गया। इसे 2019 के संशोधन अधिनियम द्वारा संशोधित किया गया। इसके द्वारा राज्य की सेवाओं में सभी पदों पर ओबीसी के लिए आरक्षण 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 27 प्रतिशत कर दिया गया।

सन् 2022 में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने अंतरिम आदेश पारित कर राज्य को 14 प्रतिशत से अधिक ओबीसी आरक्षण प्रदान करने से रोक दिया था। दिसंबर 2019 के नियमों पर रोक भी लगाई थी। 2024 में याचिकाओं को सर्वोच्च न्यायालय में ट्रांसफर कर दिया गया। सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय का आदेश रद्द नहीं किया और मामले की अंतिम सुनवाई अक्टूबर, 2025 के लिए स्थगित की है। चूंकि मध्य प्रदेश में अनुसूचित जातियों को 16 प्रतिशत और अनुसूचित जनजातियों को 20 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है। इसलिए ओबीसी आरक्षण को बढ़ाकर 27 प्रतिशत करने से आरक्षण 50 प्रतिशत की सीमा से अधिक हो जाएगा। 10 प्रतिशत आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों में कोटे के साथ, कुल आरक्षण 73 प्रतिशत हो जाएगा। मध्य प्रदेश में 2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जातियां 15.6 प्रतिशत, अनुसूचित जनजातियां 21.1 प्रतिशत और अन्य पिछड़ा वर्ग कुल जनसंख्या का 51 प्रतिशत से अधिक हैं।

मध्य प्रदेश के ओबीसी आयोग की वर्ष 2022 की एक अन्य रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि राज्य में अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। इस प्रकार, वंचित समुदाय सामूहिक रूप से राज्य की जनसंख्या का 87 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनाते हैं। फिर भी ओबीसी को पहले केवल 14 प्रतिशत आरक्षण तक ही सीमित रखा गया, जो उनके जनसांख्यिकीय हिस्से और उनके वास्तविक शैक्षिक एवं सामाजिक पिछड़ेपन के अनुपात से पूरी तरह से असंगत है। इसलिए 27 प्रतिशत तक की वृद्धि संवैधानिक रूप से अनिवार्य सुधारात्मक कदम है। इसी आधार पर मध्य प्रदेश सरकार ने उक्त शपथ पत्र दिया है। इस हलफनामे में इस बात पर जोर दिया गया कि इंदिरा साहनी निर्णय (1992) असाधारण परिस्थितियों में 50 प्रतिशत की सीमा को पार करने की अनुमति देता है। इसमें अत्यधिक पिछड़ापन और क्षेत्रीय असंतुलन शामिल हैं।

मध्य प्रदेश सरकार के अनुसार यह मामला पूरी तरह से इन असाधारण परिस्थितियों में आता है। विभिन्न आंकड़ों का हवाला देते हुए राज्य ने दावा किया कि मध्य प्रदेश में ओबीसी वर्ग सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से गहरी जड़ें जमाए हुए और बहुआयामी पिछड़ेपन से जूझ रहा है। यह विशेषाधिकार प्राप्त समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की उनकी क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। सरकार ने कहा कि यह व्यवस्थागत बहिष्कार, भेदभाव और वंचना में तब्दील हो जाता है। आयोग के निष्कर्षों से पता चला है कि लगभग आधी आबादी होने के बावजूद, उच्च सरकारी सेवाओं में ओबीसी का प्रतिनिधित्व नगण्य है। उन्हें व्यापक जातिगत भेदभाव, सार्वजनिक स्थानों तक पहुंच से वंचित रखने और भोजन के आधार पर बहिष्कार का भी सामना करना पड़ रहा है। इस बात पर जोर देते हुए कि ये स्थितियां गहरे संरचनात्मक बहिष्कार को दर्शाती हैं, राज्य ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि ओबीसी वर्ग राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से बाहर बना हुआ है। उसे और अधिक सुरक्षात्मक उपायों की आवश्यकता है।

आयोग की रिपोर्टों के अनुसार, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के सदस्य औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक व्यवसायों पर प्रतिकूल प्रभाव, ऋण बंधन के कारण शोषित श्रम स्थितियों और मध्यम या बड़े पैमाने के व्यावसायिक उद्यमों में उपस्थिति की कमी से पीड़ित हैं। सार्थक आर्थिक उन्नति का अभाव संरचनात्मक बाधाओं को दर्शाता है, जो पारंपरिक सीमाओं से परे सकारात्मक कार्रवाई को उचित ठहराता है। हलफनामे में राज्य सरकार द्वारा 1980 में गठित महाजन आयोग के निष्कर्षों का भी व्यापक रूप से सहारा लिया गया। सर्वेक्षण के बाद आयोग ने निष्कर्ष निकाला कि राज्य सेवाओं और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश दोनों में ओबीसी के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना चाहिए। हलफनामे में अदालतों के अंतरिम आदेशों से उत्पन्न प्रशासनिक गतिरोध की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया। इसमें कहा गया कि 2022 से कई विभागों में भर्ती प्रक्रिया ठप हो गई। इससे लोक सेवा आयोग और कर्मचारी चयन बोर्ड में 4,700 से अधिक पद खाली हैं। रुके हुए चयनों के परिणामस्वरूप राज्य को अपूरणीय क्षति हो रही है। सर्वोच्च न्यायालय से मामले के अंतिम निर्णय के अधीन, बढ़े हुए कोटे के तहत नियुक्तियों की अनुमति देने का आग्रह किया गया।

यह जानना उचित होगा कि 50 प्रतिशत से ज्यादा आरक्षण की अनुमति क्यों नहीं है ? इसी कड़ी में यह भी जानना चाहिए कि इंदिरा साहनी प्रकरण एवं आरक्षण पर उच्चतम न्यायालय की क्या टिप्पणी थी ? सर्वोच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र सरकार के मराठा आरक्षण के फैसले को गैर संवैधानिक करार दिया है। न्यायालय ने साथ में यह भी स्पष्ट किया कि ऐतिहासिक इंदिरा साहनी निर्णय पर पुनर्विचार की जरूरत नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने इंदिरा साहनी यानी मंडल निर्णय को दोबारा परीक्षण के लिए बड़ी खण्डपीठ को भेजने से इनकार कर दिया। यह भी कहा कि इंदिरा साहनी में 50 फीसदी रिजर्वेशन का सीमा तय करने का जो फैसला हुआ था उसे बाद के कई निर्णय में मान्य करार दिया जा चुका है। ऐसे में इंदिरा साहनी निर्णय को दोबारा देखने की जरूरत नहीं है।

भारतीय राजनीति में आरक्षण का मुद्दा समय-समय पर खूब उठता है। पिछले काफी समय से मराठा आरक्षण का मुद्दा सुर्खियों में है। मराठा रिजर्वेशन के खिलाफ दाखिल याचिका पर सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि अगर रिजर्वेशन के लिए 50 फीसदी की लिमिट नहीं रही, तो फिर समानता के अधिकार का क्या होगा? महाराष्ट्र सरकार ने दलील दी कि इंदिरा साहनी निर्णय को दोबारा देखने की जरूरत है। हालांकि, अब न्यायालय ने अपने फैसले में स्पष्ट किया है कि इंदिरा साहनी निर्णय की समीक्षा की जरूरत नहीं है। इसमें सर्वोच्च न्यायालय ने आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत तय की थी।

इंदिरा साहनी ने याचिका प्रस्तुत की थी। इंदिरा साहनी दिल्ली की एक पत्रकार थीं। साल 1991 में पीवी नरसिम्हा राव के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने आर्थिक आधार पर सामान्य श्रेणी के लिए 10 फीसदी आरक्षण देने का आदेश जारी किया था, जिसे इंदिरा साहनी ने न्यायालय में चुनौती दी थी। इंदिरा साहनी केस में नौ जजों की बेंच ने कहा था कि आरक्षित स्थानों की संख्या कुल उपलब्ध स्थानों के 50 फीसदी से अधिक नहीं होना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय के इसी ऐतिहासिक फैसले के बाद से कानून बना था कि 50 फीसदी से ज्यादा आरक्षण नहीं दिया जा सकता। समय-समय में राजस्थान में गुर्जर, हरियाणा में जाट, महाराष्ट्र में मराठा, गुजरात में पटेल जब भी आरक्षण मांगते तो सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला आड़े आ जाता है। इसके लिए राज्य सरकारें तमाम उपाय भी निकाल लेती हैं। देश के कई राज्यों में अभी भी 50 फीसदी से ज्यादा आरक्षण दिया जा रहा है।

वीपी सिंह ने मंडल कमीशन की सिफारिश को ज्ञापन के जरिए लागू कर दिया था। इंदिरा साहनी इसके वैध होने को लेकर 1 अक्टूबर, 1990 को सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गईं थीं। तब तक वीपी सिंह सत्ता से जा चुके थे। चंद्रशेखर नए प्रधानमंत्री बने। उनकी सरकार ज्यादा दिन तक चली नहीं। सन् 1991 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की सत्ता में वापसी हुई। प्रधनमंत्री बने पीवी नरसिम्हा राव। मंडल कमीशन ने पिछड़ा वर्ग के लिए 27 फीसदी आरक्षण का प्रावधान किया था। मराठा रिजर्वेशन के खिलाफ दाखिल याचिका पर सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अगर रिजर्वेशन के लिए 50 फीसदी की सीमा नहीं रही तो फिर समानता के अधिकार का क्या होगा ? इंदिरा साहनी निर्णय में 50 फीसदी रिजर्वेशन की ऊपरी सीमा तय की गई है। महाराष्ट्र सरकार की दलील है कि इंदिरा साहनी निर्णय को दोबारा देखने की जरूरत है।

शरद पूर्णिमा पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

शरद पूर्णिमा का विज्ञान -चंद्र अमृत से झरती समृद्धि

शरद पूर्णिमा को 'कौमुदी' अर्थात् चन्द्र प्रकाश, 'कोजागरी पूर्णिमा' और 'रास पूर्णिमा' के नाम से भी जाना जाता है। कोजागर का अर्थ है 'कौन जाग रहा है' और इसके पीछे मान्यता है कि इस रात में जागकर जो श्रद्धालु मां लक्ष्मी की उपासना करते हैं, उन पर लक्ष्मी की कृपा अवश्य होती है। शरद पूर्णिमा पर्व को भगवान श्रीकृष्ण से भी जोड़ा जाता है और इसे 'रास पूर्णिमा' का नाम दिए जाने के पीछे मान्यता यही है कि शरद पूर्णिमा की रात्रि को ही श्रीकृष्ण ने अपनी मुरली की मधुर धुन पर गोपियों के साथ यमुना तट पर 'महारास' नामक दिव्य नृत्य किया था। धर्मशास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने रासोत्सव का यह दिन वास्तव में जगत की भलाई के लिए ही निर्धारित किया था। आज भी रास पूर्णिमा को वृंदावन और बृज में बड़े स्तर पर मनाया जाता है।

वैसे तो हिन्दू धर्म में प्रत्येक पूर्णिमा का अपना एक अलग महत्व है और हर पूर्णिमा तिथि को धनदायक तथा शुभ माना जाता है किन्तु कुछ विशेष पूर्णिमा तिथियों को बेहद शुभ एवं समृद्धशाली माना गया है और इन्हीं पूर्णिमा में से एक है 'शरद पूर्णिमा'। हिन्दू पंचांग में आश्विन मास में आने वाली इस पूर्णिमा का सर्वाधिक महत्व माना गया है, जो 'धनदायक पूर्णिमा' भी मानी जाती है। चंद्रमा जब हर महीने शुक्ल पक्ष की आखिरी तिथि को पूर्ण रुप से आसमान में दिखाई देता है, वह पूर्णिमा तिथि होती है और आश्विन मास की पूर्णिमा को 'शरद पूर्णिमा' पर्व के रूप में मनाया जाता है, जो हिन्दू धर्म में सर्वाधिक धार्मिक महत्व वाली पूर्णिमा मानी जाती है। पंचांग के अनुसार इस वर्ष आश्विन मास की पूर्णिमा तिथि 6 अक्टूबर को दोपहर 12:23 बजे से प्रारंभ होकर दूसरे दिन 7 अक्टूबर को प्रातःकाल 9:16 बजे तक रहेगी। ऐसे में शरद पूर्णिमा का पावन पर्व 6 अक्टूबर को मनाया जाएगा।

शरद पूर्णिमा वास्तव में एक ऐसा धार्मिक पर्व है, जिसमें चंद्रमा के पूर्ण स्वरूप का उत्सव मनाया जाता है, इसीलिए इस दिन चंद्रमा की पूजा की जाती है। शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा की रोशनी धरती को अपने प्रकाश से आलोकित करती है और इसी उजियारे के बीच पूर्णिमा का यह पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इस पूर्णिमा पर चंद्रमा से उत्पन्न होने वाली किरणें अद्भुत, स्वास्थ्यप्रद और पुष्टिवर्धक गुणों से भरपूर होती हैं और चंद्रमा की इन रश्मियों से आरोग्य की प्राप्ति भी होती है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में चंद्रमा को 'औषधीश' (औषधियों का स्वामी) कहा गया है। 'चंद्रमा मनसो जातः' यानी चंद्रमा को वेद, पुराण एवं ग्रंथों में मन के तुल्य स्वीकार किया गया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः' यानी मैं ही रसस्वरूप अमृतमय चंद्रमा होकर संपूर्ण औषधियों और वनस्पतियों को पुष्ट करता हूं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वर्षभर में केवल शरद पूर्णिमा के ही दिन चंद्रमा सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है अर्थात् चंद्रमा पूरी 16 कलाओं के साथ उदय होते हैं। ये 16 कलाएं हैं अमृत, मनदा, पुष्प, पुष्टि, तुष्टि, धृति, शाशनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण, पूर्णामृत, प्रतिपदा। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक कला मनुष्य की एक विशेषता का प्रतिनिधित्व करती है और इन सभी 16 कलाओं से सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार केवल भगवान श्रीकृष्ण ही सभी सोलह कलाओं से युक्त थे।

शरद पूर्णिमा को 'कौमुदी' अर्थात चन्द्र प्रकाश, 'कोजागरी पूर्णिमा' और 'रास पूर्णिमा' के नाम से भी जाना जाता है। कोजागर का अर्थ है 'कौन जाग रहा है' और इसके पीछे मान्यता है कि इस रात में जागकर जो श्रद्धालु मां लक्ष्मी की उपासना करते हैं, उन पर लक्ष्मी की कृपा अवश्य होती है। शरद पूर्णिमा पर्व को भगवान श्रीकृष्ण से भी जोड़ा जाता है और इसे 'रास पूर्णिमा' का नाम दिए जाने के पीछे मान्यता यही है कि शरद पूर्णिमा की रात्रि को ही श्रीकृष्ण ने अपनी मुरली की मधुर धुन पर गोपियों के साथ यमुना तट पर 'महारास' नामक दिव्य नृत्य किया था। धर्मशास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने रासोत्सव का यह दिन वास्तव में जगत की भलाई के लिए ही निर्धारित किया था। आज भी रास पूर्णिमा को वृंदावन और बृज में बड़े स्तर पर मनाया जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार शरद पूर्णिमा के ही दिन समुद्र मंथन से धन की देवी मां लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी, इसीलिए शरद पूर्णिमा को 'धनदायक' भी माना जाता है। मान्यता है कि मां लक्ष्मी इस दिन पृथ्वी पर विचरण करती हैं और जो लोग रात्रि जागरण कर उनका पूजन करते हैं, वे उन पर अपनी कृपा बरसाती हैं और उन्हें धन-वैभव प्रदान करती हैं। ऐसी मान्यता भी है कि शरद पूर्णिमा पर व्रत रखकर रातभर सच्चे हृदय से मां लक्ष्मी का पूजन करने से व्यक्ति की कुण्डली में लक्ष्मी योग नहीं होने पर भी अथाह धन एवं वैभव की प्राप्ति होती है। इस दिन मां लक्ष्मी के साथ भगवान विष्णु की भी पूजा अर्चना की जाती है और शिव-पार्वती तथा कार्तिकेय की भी पूजा का विधान है। शास्त्रों में यह उल्लेख भी मिलता है कि लंकाधिपति रावण शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा की अमृतमयी किरणों को दर्पण के माध्यम से अपनी नाभि पर ग्रहण कर पुनर्यौवन की शक्ति प्राप्त करता था।

धार्मिक शास्त्रों के अनुसार शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होता है और ऐसा प्रतीत होता है, जैसे पृथ्वी चंद्रमा की दूधिया रोशनी में नहा गई है। इस अवसर पर चंद्रमा की विशेष पूजा-अर्चना किए जाने का विधान है और चंद्र देवता को खीर का भोग लगाया जाता है। यह प्रसाद चंद्रमा के सभी सकारात्मक एवं दिव्य गुणों के लिए घर के आंगन में खुले आसमान के नीचे रखा जाता है। दरअसल धार्मिक मान्यताएं है कि इस दिन आसमान से अमृत की बूंदों की वर्षा होती है और इस अमृत वर्षा से चंद्रमा की चांदनी में रखी खीर में भी अमृत समा जाता है, जिससे यह खीर अमृत समान हो जाती है, जिसे परिजनों द्वारा सुबह प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दूध, चीनी तथा चावल चंद्र ग्रह से जुड़े हैं, इसलिए इनमें चंद्रमा का प्रभाव सर्वाधिक रहता है। वैसे शरद पूर्णिमा की रात को चांद की रोशनी में खीर रखने के पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं। शरद पूर्णिमा की रात्रि को खुले आसमान के नीचे रखी जाने वाली खीर का औषधीय के अलावा वैज्ञानिक महत्व भी सिद्ध हो चुका है। दरअसल दूध में प्रचुर मात्रा में लैक्टिक एसिड होता है, जो चंद्रमा की तेज रोशनी में दूध में पहले से मौजूद बैक्टीरिया को और बढ़ाने में सहायक होता है। दूसरी ओर खीर में पड़े चावलों में मौजूद स्टार्च इस कार्य को और भी आसान बना देता है। शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी सबसे तेज होती है और रात में चांदी के बर्तन में खीर रखने से उसमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता का विस्तार होता है। दरअसल चांदी के बर्तन में रोग-प्रतिरोधक क्षमता काफी ज्यादा होती है, इसलिए घर में अगर कोई चांदी का बर्तन हो तो शरद पूर्णिमा की रात उसमें खीर रखना सबसे ज्यादा फायदेमंद है। माना जाता है कि यह अमृतमय खीर खाने से मनुष्य की उम्र बढ़ती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार शरद पूर्णिमा को वर्षा काल की समाप्ति तथा शीत काल की शुरुआत माना जाता है अर्थात् इस दिन से सर्दियों की शुरुआत हो जाती है। यह वही समय है, जब मौसम में परिवर्तन की शुरूआत होती है और शीत ऋतु का आगमन शुरू होता है। शरद पूर्णिमा से ही ऋतु परिवर्तन की शुरुआत होती है, अतः वात, पित्त और कफ दोषों को सही स्थिति में लाने के लिए मधुर रस अर्थात् खीर का सेवन किया जाता है। खीर मीठी होती है और शीत ऋतु में होने वाले पित्त को कम करती है। आयुर्वेद के अनुसार शरद पूर्णिमा पर्व का महत्व मौसम परिवर्तन के हिसाब से बहुत ज्यादा है। दरअसल शरद पूर्णिमा से ही मौसम में ठंड की शुरुआत होती है और यह पर्व शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता पर अच्छा प्रभाव डालता है तथा आगे चलकर पाचन क्रिया भी सही करता है, जिससे सर्दी के मौसम में गरिष्ठ भोजन कर स्वस्थ रहा जा सकता है। कुछ राज्यों में शरद पूर्णिमा को फसल कटाई के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।

दृष्टिकोण

संध्या अग्रवाल
लेखक साहित्यकार हैं।

परंपरा और बाज़ार के बीच त्योहारों का बदलता स्वरूप

भारत त्योहारों की भूमि है। यहाँ वर्ष का कोई महीना ऐसा नहीं जाता जब कोई उत्सव न हो। दीपावली की उजास, होली की रंगत, राखी का अपनापन, नवरात्र का आस्था-संगीत – ये सब हमारी संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव हैं। वे हमें एक-दूसरे से जोड़ते हैं, सामूहिकता और आत्मीयता का अनुभव कराते हैं।

लेकिन समय बदल रहा है और त्योहारों का स्वरूप भी बदल रहा है। पहले त्योहार की तैयारी महीनों पहले से शुरू होती थी। घर की दीवारें चूना-गेरू से रंगी जातीं, आँगन में रंगोली सजती, रसोई से पकवानों की खुशबू आती और बच्चे मोहल्ले के हर घर में जाकर उत्साह बाँटते। यह सब मिलकर त्योहार को सामूहिकता का पर्व बना देता था।

अब दृश्य अलग है। आज त्योहार का मतलब है – ऑनलाइन शॉपिंग सेल, ब्रांडेड गिफ़्ट पैक, सजावट की तैयार सामग्री और मॉल में घूमना। घर की चौखट पर मिट्टी के दिए जलाने की परंपरा को बिजली की सीरियल लाइट्स ने बदल दिया है। राखी का धागा अब दुकानों से नहीं, बल्कि ऑनलाइन पोर्टल्स से ऑर्डर होता है। मिठाई की थालियाँ पड़ोस में बाँटने की जगह अब पैक्ड गिफ़्ट हैम्पर भेज दिए जाते हैं।

यह बदलाव केवल सुविधाजनक ही नहीं, कभी-कभी आवश्यक भी है। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में सबके पास समय कम है। बाज़ार और तकनीक ने हमारे लिए विकल्प आसान कर दिए हैं। पर सवाल यह है कि क्या इन सुविधाओं ने त्योहारों की आत्मा को पीछे धकेल दिया है?

त्योहारों का मूल उद्देश्य परिवार और समाज को जोड़ना था। दीपावली केवल पटाखे और सजावट नहीं है, बल्कि बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश है। होली केवल रंगों की उछाल नहीं, बल्कि मन की कटुता को धोकर नए रिश्ते बनाने का अवसर है। राखी केवल धागा नहीं, बल्कि भाई-बहन के प्रेम और जिम्मेदारी का प्रतीक है। जब हम इन त्योहारों को केवल बाज़ार और खर्च तक सीमित कर देते हैं, तो उनकी आत्मा खोने लगती है।

यह भी सच है कि बाज़ार ने कुछ सकारात्मक पहलू भी दिए हैं। ऑनलाइन शॉपिंग ने दूर-दराज़ बसे परिजनों तक उपहार पहुँचाना आसान कर दिया है। नए-नए उत्पादों ने सजावट और सुविधा को बढ़ाया है। लेकिन साथ ही हमें यह भी याद रखना होगा कि त्योहार सिर्फ़ उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि संस्कृति की धरोहर हैं।

त्योहारों की रौनक तभी असली है जब उसमें मानवीय स्पर्श हो। सोचिए, क्या ऑनलाइन भेजा गया गिफ़्ट उस अपनत्व की बराबरी कर सकता है, जो पड़ोसन के हाथ से बनी गुझिया में मिलती है? क्या बाज़ार से खरीदी मिठाई उस मिठास का स्थान ले सकती है, जो दादी-नानी के हाथ की सींकी हुई टिक्कियों में होती थी?

आज आवश्यकता है कि हम आधुनिक साधनों और बाज़ार के आकर्षण को अपनाते हुए भी त्योहारों की मूल आत्मा को न भूलें। त्योहार केवल खरीदारी का मौसम नहीं, बल्कि भावनाओं का उत्सव हैं। बच्चों को चाहिए कि वे केवल डिजिटल आतिशबाज़ी गेम खेलकर संतुष्ट न हों, बल्कि सचमुच अपने आँगन में दिए सजाएँ। बड़ों को चाहिए कि वे केवल मोबाइल पर शुभकामना भेजकर न रुकें, बल्कि संभव हो तो मिलने जाएँ, साथ बैठकर बातें करें।

त्योहारों की असली खुशी वही है, जब एक छोटे से गाँव में कोई बच्चा मिट्टी का दिया बना रहा हो और शहर में रहने वाला परिवार भी उसे जलाने का महत्व समझे। जब गली-मोहल्ले में सब मिलकर सजावट करें, पकवान बाँटें और गीत-संगीत में हिस्सा लें।

बाज़ार हो, डिजिटल साधन हों – यह समय की मांग है। पर त्योहारों की रूह तभी जीवित रहेगी जब उनमें आत्मीयता, मिलन और सामूहिकता बनी रहे। वरना कहीं ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ी के लिए त्योहार केवल 'ऑनलाइन ऑफ़र' बनकर रह जाएँ और उनके पीछे छिपी संस्कृति हमेशा के लिए धुंधली हो जाए।

कोल्ड्रिफ सिरप लेने से आमला ब्लॉक के दो बच्चों की मौत की आशंका, पुष्टि नहीं

बुखार आने पर इलाज के लिए परासिया ले गये थे परिजन

एस. द्विवेदी, बैतूल। कोल्ड्रिफ कफ सिरप से जिले के आमला ब्लॉक में दो बच्चों की मौत होने की जानकारी सामने आई है। हालांकि अभी स्वास्थ्य विभाग ने इसकी पुष्टि नहीं की है। फिलहाल सीएमएचओ ने चार सदस्यीय दल गठित कर विस्तृत जांच करने के निर्देश जारी कर दिए है। यह दल इस मामले की पूरी जांच करेगा। स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार आमला विकासखंड के कलमेश्वरा और जामुन बिछुआ गांव के दो बच्चे, कबीर पिता कमलेश (4) और गर्मित पिता निखलेश (ढाई साल) गंभीर किडनी समस्या से पीड़ित हुए थे। बताया जा रहा है कि इन बच्चों को बुखार आने के बाद इलाज के लिए परासिया ले जाया गया था, जहां उनकी तबीयत और बिगड़ गई। परिजनों के अनुसार कबीर को डॉ. प्रवीण सोनी ने प्रिस्क्रिप्शन में कोल्ड्रिफ कफ सिरप लिखी थी। अब जिला प्रशासन पूरे मामले की जांच में जुटा हुआ है। सीएमएचओ डॉ. मनोज हुरमाडे ने बताया कि बच्चों को उपचार के लिए छिंदवाड़ा जिले के परासिया ले गये थे, जिसमें से एक बच्चे की मौत भोपाल के हमीदिया अस्पताल में हुई है, वहीं दूसरे बच्चे को एम्स में भर्ती करवाया गया था, जहां से परिजन बच्चे को लेकर मामा के घर लादी लेकर गये थे, जहां उसकी मौत हो गई थी।

बुखार आने पर उपचार के लिए ले गये थे परासिया

परिजनों के अनुसार 24 अगस्त को सबसे पहले कबीर को बुखार आने पर परासिया के डॉ. प्रवीण सोनी को दिखाया गया। इलाज के बाद उसे घर ले जाया गया, लेकिन जब हालत में सुधार नहीं हुआ, तो परासिया के दो अन्य डॉक्टरों से भी सलाह ली गई। यहां बताया गया कि बच्चे की किडनी प्रभावित हो रही है। इसके बाद परिजन उसे नागपुर ले गए, जहां एक दिन अस्पताल में भर्ती होने के बाद डॉक्टर ने घर ले जाने की सलाह दी, लेकिन परिजन संतुष्ट नहीं थे, इसलिए वे उसे सीधे भोपाल ले गए। वहां पहुंचते ही रात करीब साढ़े चार बजे कबीर की मौत हो गई। दूसरी घटना लादी ग्राम की है। यहां ढाई साल के गर्मित पिता निखिलेश की तबीयत बिगड़ने पर उसका इलाज कराया जा रहा था, लेकिन एक अक्टूबर को गांव में ही उसकी मौत हो गई। आमला बीएमओ डॉ. अशोक नरवरे के अनुसार उसे भी परिजन पहले इलाज के लिए परासिया के डॉ. प्रवीण सोनी के पास ले गए थे।

विभाग ने जारी की एडवाइजरी

छिंदवाड़ा में 10 बच्चों की मौत इस कफ सिरप के सेवन से होने के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इसकी बिक्री को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया है और कोल्ड्रिफ कफ सिरप को जप्त करने के लिए छापामारी अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। आपको बता दें कि केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार ने मप्र शासन के अनुरोध पर तमिलनाडु के कांचीपुरम में स्थित कंपनी के परिसर से नमूने लेकर जांच करवाई थी, जिसकी शनिवार सुबह रिपोर्ट आने पर सिरप के नमूने अमान्य पाये गए, जिसके बाद तत्काल इस पर कार्यवाही करते हुए पूरे प्रदेश में सिरप के विक्रय को प्रतिबंधित कर दिया गया और मुख्यमंत्री के निर्देश पर राज्य स्तर पर इस मामले में संयुक्त जांच टीमें बनाकर छापामारी अभियान चलाया जा रहा है। मप्र के अलावा राजस्थान एवं पुडुचेरी में भी इस पर प्रतिबंध लगाया गया है।

आमला ब्लॉक के बच्चों के सिरप पीने से मौत का मामला सामने आने पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल डॉ. मनोज कुमार हुरमाडे ने जिले के सभी निजी मेडिकल स्टोरों और प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों को सतर्कता के निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि यह सही बात है कि कई लोग पंजीकृत चिकित्सकों के पर्चे लिए बिना कफ सिरप सहित अन्य औषधियां खरीदते हैं। मेडिकल संचालकों को केवल पंजीकृत चिकित्सकों द्वारा निर्धारित की गई औषधियां और सिरप ही नागरिकों को देना चाहिए। सीएमएचओ डॉ. हुरमाडे ने नागरिकों से अपील की है कि वे भी सावधानी बरतें और किसी भी दवा या सिरप का उपयोग डॉक्टर की सलाह के बिना न करें। उन्होंने औषधि निरीक्षक, खाद्य एवं औषधि प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि वे भी अपने स्तर पर औषधि वितरण की प्रक्रिया की निगरानी करें और किसी भी स्थिति में अप्रमाणित या संदिग्ध गुणवत्ता की दवाइयां न बिके, यह सुनिश्चित करें।

इनका कहना है –

- आमला विकासखंड के दो बच्चों का इलाज छिंदवाड़ा जिले के परासिया में एक निजी चिकित्सक द्वारा किया गया था। दोनों बच्चों की मौत के पीछे खांसी सिरप का सेवन होने की पुष्टि फिलहाल नहीं हुई है। मैंने चार सदस्यीय जांच दल बनाकर वहां भेजा है। रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा कि बच्चों की मौत के पीछे क्या कारण है।

– डॉ. मनोज हुरमाडे,
सीएमएचओ, बैतूल

- अभी इस मामले में सीएमएचओ ने टीम गठित कर जांच के लिए आदेश जारी किए है। उसकी रिपोर्ट आने के बाद ही हम कुछ बता पाऐंगे।

– डॉ. अशोक नरवरे,
बीएमओ, आमला

बैतूल में ध्वनि तरंगों से उपचार, पूर्व सैनिकों ने उठाया लाभ

जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में साउंड थेरेपी का आयोजन

बैतूल। जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में रविवार को साउंड थेरेपी का आयोजन किया गया। इस दौरान पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को ध्वनि स्नान दिया गया। भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त कैप्टन श्री सुमीत सिंह ने इस उपचार के लिए 25 ध्वनि उपकरणों का उपयोग किया गया, जिनमें से कई आयातित थे। कैप्टन सिंह यूनाइटेड किंगडम के इंटरनेशनल प्रैक्टिशनर्स ऑफ होलिस्टिक मेडिसिन द्वारा मान्यता प्राप्त एक संस्थान से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षित ध्वनि उपचारक हैं। महिलाओं और बच्चों सहित लाभार्थियों ने उपचार के बाद सुखद अनुभूति और हल्कापन महसूस किया। ध्वनि उपचार का प्रयोग बैतूल में पहली बार किया जा रहा है। साउंड हीलिंग या ध्वनि चिकित्सा, मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए ध्वनियों और कंपनों का उपयोग करती है, जिससे तनाव कम होता है और नींद में सुधार होता है। साथ ही चिंता से राहत मिलती है और दर्द प्रबंधन में मदद मिलती है। समग्र ऊर्जा और ध्यान में भी वृद्धि होती है। यह शरीर की प्राकृतिक उपचार प्रक्रियाओं को उत्तेजित करती है और मन, शरीर व आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करती है। उन्होंने बताया कि यह गहन विश्राम प्रदान करती है, जिससे शरीर से तनाव कम होता है और शांति व सुकून महसूस होता है। ध्वनि चिकित्सा कोर्टिसोल हार्मोन के स्तर को कम करने और मन को शांत करने में मदद करती है, जिससे चिंता और अवसाद के लक्षणों में कमी आती है। नियमित अभ्यास से नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है, जिससे समग्र स्वास्थ्य बेहतर होता है। यह शरीर में कंपन और ऊर्जा को संतुलित करके पुराने दर्द को कम करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक है। साउंड थेरेपी शरीर में कोर्टिसोल के स्तर को कम करती है, जो कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए जिम्मेदार है। ध्वनि उपचार मन को साफ करता है और मानसिक स्पष्टता बढ़ाता है, जिससे ध्यान और एकाग्रता में सुधार होता है। यह शरीर के ऊर्जा केंद्रों चक्रों को संतुलित करने में मदद करती है, जिससे जीवन शक्ति बढ़ती है। ध्वनि चिकित्सा दबी हुई भावनाओं को सतह पर लाती है, जिससे भावनात्मक अभिव्यक्ति और उपचार को बढ़ावा मिलता है। ध्वनि चिकित्सा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तरों पर शरीर और मन के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।

कलेक्टर ने कहा- दोनों बच्चों का इलाज बैतूल में नहीं हुआ, जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय नहीं

बैतूल। आमला विकासखंड में निवासरत दो बच्चों की मृत्यु कोल्ड्रिफ सिरप से होने की खबरें प्रसारित की जा रही हैं। इस संबंध में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया है कि दोनों बच्चों का इलाज बैतूल जिले के किसी भी शासकीय या निजी अस्पताल में नहीं हुआ है और जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय भी नहीं पाया गया है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि ग्राम कलमेश्वरा निवासी बालक कबीर (4 वर्ष) पिता कैलाश और ग्राम जामुन बिछुआ निवासी गर्भित (ढाई वर्ष) पिता निखिलेश का इलाज बैतूल जिले में नहीं हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, बालक कबीर की मृत्यु अन्य जिले में, जबकि गर्भित की मृत्यु छिंदवाड़ा जिले के परासिया में इलाज के बाद उसके रिश्तेदार के घर ग्राम लादी (विकासखंड आमला) में हुई है। दोनों बच्चों की मृत्यु 8 सितंबर और 1 अक्टूबर 2025 को हुई थी। उन्होंने बताया कि अब तक जिले के स्वास्थ्य विभाग, पुलिस या प्रशासन को कोल्ड्रिफ सिरप से किसी की मृत्यु की कोई सूचना या शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। कलेक्टर सूर्यवंशी ने कहा कि मेडिकल टीम द्वारा किए गए निरीक्षण में पाया गया कि बैतूल जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय नहीं हो रहा है और न ही मेडिकल स्टोर में यह सिरप उपलब्ध हैं। मीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार, दोनों बच्चों का प्राथमिक उपचार परासिया (जिला छिंदवाड़ा) के डॉ. प्रवीण सोनी द्वारा किया गया था। बच्चों की मृत्यु का अब तक कोई स्पष्ट कारण सामने नहीं आया है और अभिभावकों ने भी प्रशासन को कोई सूचना नहीं दी है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने यह भी बताया कि आमला क्षेत्र के ग्राम छिंदवाड़ा जिले के परासिया के समीप स्थित है, जिसके कारण वहां के लोग उपचार के लिए परासिया का रुख करते हैं। उन्होंने कहा कि यह मामला बैतूल जिले से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं है, फिर भी मृतक बच्चे बैतूल निवासी होने के कारण पूरी संवेदनशीलता से जांच की जा रही है।उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को गाइडलाइन का गंभीरता से पालन करने और कफ सिरप संबंधी जनजागरूकता अभियान चलाने के निर्देश भी दिए हैं।

शाहपुर परिषद उपाध्यक्ष के पति पर चाकू से हमला

छेड़खानी का विरोध करने के बाद हुआ विवाद, दोनों पक्षों पर मामला दर्ज

बैतूल। शाहपुर में नगर परिषद उपाध्यक्ष पम्मी राठौर के पति दिनेश राठौर पर चाकू से हमला हो गया। यह घटना शनिवार देर रात हुई, जब दिनेश अपनी बेटी से छेडख़ानी के आरोप में एक युवक के घर गए थे। विवाद के दौरान दोनों पक्षों के बीच मारपीट हुई। जिसमें दिनेश गंभीर रूप से घायल हो गए। विवाद बढ़ने पर एक युवक ने दिनेश राठौर पर चाकू से हमला कर दिया। उनकी गाड़ी को भी नुकसान पहुंचाया गया। दिनेश को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर लाया गया, फिर बैतूल जिला अस्पताल रेफर किया गया। बाद में परिजन उन्हें पाढर अस्पताल ले गए, जहां उनका इलाज चल रहा है। दिनेश राठौर के सिर में 18 टांके आए है। टीआई मुकेश ठाकुर ने बताया कि दोनों पक्षों के खिलाफ मारपीट और चोट पहुंचाने के आरोप में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। नपा उपाध्यक्ष के पति की ओर से संदीप गुप्ता और अन्य के खिलाफ मारपीट की शिकायत दर्ज की गई है। वहीं, संदीप गुप्ता ने भी नपा उपाध्यक्ष पति पर घर में घुसकर गाली-गलौज और मारपीट करने का आरोप लगाया है।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता रैली से शुरू हुआ सेवा सप्ताह

तीन लायंस क्लबों की निकली संयुक्त रैली, शिवाजी ऑडिटोरियम में हुआ समापन

बैतूल। लायंस क्लब बैतूल सिटी, लायंस क्लब बैतूल महक और लायंस क्लब बैतूल अमीगोस के संयुक्त तत्वावधान में सेवा सप्ताह की शुरुआत मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता वाहन रैली से की गई। इस रैली का नेतृत्व तीनों क्लबों के अध्यक्ष बी.आर. कुबड़े अध्यक्ष, लायंस क्लब बैतूल सिटी, श्रीमती उमा पवार अध्यक्ष लायंस क्लब बैतूल महक और तिलक पगारिया अध्यक्ष, लायंस क्लब बैतूल अमीगोस ने किया। तीनों अध्यक्षों ने एक ओपन जीप से मानसिक स्वास्थ्य पर बने पोस्टर्स और तख्तियाँ प्रदर्शित कर शहरवासियों को जागरूकता का सशक्त संदेश दिया। इस रैली में 50

से अधिक दोपहिया और चारपहिया वाहन तथा 100 से अधिक लायंस और लियो सदस्य शामिल हुए। रैली का जगह-जगह उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया, विशेषकर डागा हाउस पर हुआ स्वागत आकर्षण का केंद्र रहा। यातायात पुलिस ने ट्रैफिक डायवर्ट कर रैली को सफल बनाने में सहयोग दिया। सेवा सप्ताह के दौरान स्कूलों और कॉलेजों में मनोवैज्ञानिकों द्वारा ओपन माइक सेशन्स, योग, लाफ्टर थेरेपी जैसी गतिविधिया आयोजित की जाएंगी। इस श्रृंखला का समापन शिवाजी ऑडिटोरियम में हुआ, जिसकी अध्यक्षता रेडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. अरुण जयसिंगपुरे और ब्लड बैंक अधिकारी सुश्री अंकिता सीते ने की। इस आयोजन की सफलता में मल्टीपल डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन (अंतरराष्ट्रीय सर्विस वीक) एम.जे.एफ. लायन पी.एस. बग्गा, लायन शुक्ला तथा लियो अदेश लूनिया सहित अनेक लायंस एवं लियो साथियों का योगदान रहा।

जिले में अभी तक 998.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

बैतूल। जिले की औसत वर्षा 1083.9 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 998.8 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 1011.0 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 05 अक्टूबर 2025 को प्रातः 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 2.9 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 05 अक्टूबर 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील बैतूल में 3.2, घोड़ाडोंगरी में 15.0, चिचोली में 0.0, शाहपुर में 3.0, मुलताई में 0.0, प्रभात पट्टन में 0.0, आमला में 8.0, भैंसदेही में 0.0, आठनेर में 0.0. तथा भीमपुर में 0.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

लेकमैन ओपन वॉटर स्विमिंग में बैतूल के तैराकों ने लहराया परचम

बैतूल। भोपाल के बड़े तालाब में 5 अक्टूबर को आयोजित लेकमैन ओपन वॉटर स्विमिंग के सेकंड एडिशन में बैतूल जिला तैराकी विकास उत्थान संघ की टीम ने शानदार प्रदर्शन कर जिले का नाम रोशन किया। संघ के जिला अध्यक्ष राजा साहू से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में एक किलोमीटर, दो किलोमीटर, पांच किलोमीटर और दस किलोमीटर की श्रेणियों में मुकाबले आयोजित हुए। बैतूल के देवेंद्र यादव ने 5 किलोमीटर ओपन वॉटर स्विमिंग में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। इसी वर्ग में एकमात्र पैरा स्विमर चंद्रशेखर माकोड़े ने साहसिक भागीदारी निभाई। उनके साथ सौरभ यादव, अनिकेत यादव और सूर्यकांत मालवीय ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वहीं 10 किलोमीटर की चुनौतीपूर्ण रेस में नगर पालिका स्विमिंग पूल के कोच गोवर्धन यादव ने दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि हिमांशु सतनकर ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस वर्ग में परिमल और प्रसाद निंबालकर ने भी अपनी क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया। बैतूल स्विमिंग संघ की ओर से सभी प्रतिभागियों को उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी गईं।

बेहतर जीवन के लिए पौष्टिक भोजन करें

स्थानीय खाद्य पदार्थों की पौष्टिक व्यंजन प्रदर्शनी संपन्न

बैतूल। 8वां राष्ट्रीय पोषण माह का उद्देश्य सामुदायिक लामबंदी सुनिश्चित करना और छोटे बच्चों तथा महिलाओं में कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिए जन भागीदारी को बढ़ावा देना तथा सभी के लिए स्वास्थ्य और पोषण सुनिश्चित करना है। सुपोषित और समृद्ध भारत निर्माण है। पोषण कुपोषण से निपटने और समग्र बाल स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक राष्ट्रव्यापी पहल है। ग्राम पंचायत जीन में 8वें राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत एक सेक्टर स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सेक्टर पर्यवेक्षक श्रीमती पूर्णिमा बुनकर के निर्देशन में और ग्राम सरपंच श्रीमती सुनीता उइके के आतिथ्य में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित किया गया। इस मौके पर पूर्णिमा बुनकर ने कहा कि इस राष्ट्रीय पोषण सप्ताह में भारत ने बेहतर जीवन के लिए सही भोजन करें थीम को अपनाया है, जो सभी आयु समूहों में स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और कुपोषण से निपटने में संतुलित पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनके साथ ग्राम की अनेक महिलाएं तथा ग्रामीण जन भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सेक्टर पर्यवेक्षक द्वारा पोषण माह 2025 की थीम के अनुसार अनेक स्वास्थ्य और पोषण आहार संबंधी विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। जिससे मोटापा नियंत्रण, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा, शिशु एवं बाल आहार प्रथाएं, स्थानीय खाद्य पदार्थ एवं उत्पादों को बढ़ावा देना शामिल था। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा स्थानीय खाद्य पदार्थों से पौष्टिक व्यंजन तैयार कर प्रदर्शनी लगाई गई। जिसे ग्रामीणों ने सराहना के साथ अवलोकित किया। कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण की शपथ के साथ किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाओं ने पोषण आहार का लुत्फ उठाया।

अखंड भारत के संकल्प के साथ क्षत्रिय महासभा ने मनाया दशहरा मिलन

शस्त्र पूजन व पदभार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ समारोह

बैतूल। ग्राम केलापुर में 5 अक्टूबर को क्षत्रीय महासभा राजपूत समाज अखंड भारत के तत्वावधान में दशहरा मिलन समारोह एवं शस्त्र पूजन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैतूल जिले के सैकड़ों क्षत्रीय बंधु और क्षत्रानियां एकत्रित हुए, जहां परंपरागत रीति-रिवाजों के साथ शस्त्र पूजन किया गया तथा समाज की एकता और गौरव को सशक्त करने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षत्रीय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर जगदीश सिंह राघव ने की। मंच से संगठन के प्रदेश संगठन मंत्री विनय सिंह राठौड़ ने समाज को संबोधित करते हुए संगठन की मजबूती, युवा शक्ति की भूमिका और एकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस दौरान रूप सिंह ठाकुर को जिला कार्यकारी

अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। वहीं रविशंकर तोमर को जिला प्रचार मंत्री, गीतेश सिंह चौहान को युवा महामंत्री, संतोष सिंह चौहान को ब्लॉक अध्यक्ष एवं मुकेश सिंह को कार्यकारी सदस्य बनाया गया। इस अवसर पर सिया राघव ने प्रख्यात वीर राजा पृथ्वीराज चौहान के जीवन पर प्रेरक संबोधन दिया, जिससे कार्यक्रम स्थल तालियों की गडग़ड़ाहट से गूंज उठा। समारोह में क्षत्रीय समाज की महिलाओं की भी उल्लेखनीय भागीदारी रही। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ठाकुर जगदीश सिंह राघव, विनय सिंह राठौड़, दिनेश सिंह ठाकुर, राजमणि बाई चौहान, शिया सिंह राघव एवं रूप सिंह ठाकुर सहित अनेक गणमान्य क्षत्रीय उपस्थित रहे। समारोह के अंत में राष्ट एकता एवं अखंड भारत के निर्माण का संकल्प लिया गया। पूरा आयोजन समाज की गरिमा, परंपरा और शौर्य भावना से ओतप्रोत रहा, जिसमें संगठन के सभी सदस्यों ने एक स्वर में जय राजपूताना के जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

मैं नहीं.. राष्ट्र प्रथम से ही परम वैभव का लक्ष्य हासिल होगा

संघ की स्थापना के 100 वर्ष, हर दिशाओं में नजर आ रहे संचलन से धार की धरा हुई संघमय

धार। संघ की स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) की बेला पर 5 अक्टूबर को ऐतिहासिक धारा नगरी में स्वयं सेवकों का निकला विराट और भव्य पथ संचलन बरसों बरस याद रहने वाली स्मृतियों में अंकित हो गया है । हर दिशाओं में नजर आ रहे संचलन से ऐसा लग रहा था मानों धार की धरा संघमय हो गई हो । विजयादशमी के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाला पथ संचलन इस वर्ष संघ की स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) होने से भव्य स्वरूप में निकला। संघ की 14 बस्तियां 136 मोहल्ले से सभी स्वयंसेवक किला मैदान पर एकत्रित हुए । संचलन को लेकर पूरे नगर में भारी उत्साह दिखाई दिया।

विगत एक माह से स्वयंसेवक संचलन की तैयारी के लिए दिन-रात जुटे हुए थे। संघ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष निकलने वाला संचलन इस वर्ष बहुत ही ऐतिहासिक एवं विराट रूप में निकला। सभी स्वयंसेवक संघ की गणवेश धारण करते हुए अनुशासन के साथ कदमताल मिलाते हुए संचलनों में चल रहे थे। छोटे बच्चे भी संचलन में सम्मिलित होने के लिए दिखे आतुर। हिंदू समाज प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हुआ सहभागी। धार शहर के हिंदू समाज में आत्मविश्वास नजर आया। नगर में जगह- जगह छोटी - छोटी बेटियों एवं मातृशक्तियों द्वारा आरती उतारकर स्वागत किया गया ।बच्चों की आंखों में देशभक्ति की ज्योति और स्वर में समर्पण की गूंज देखकर लगा मानो कि आने वाली पीढ़ी राष्ट्रसेवा की ज्योति को और प्रखर बनाएगी। यह क्षण संस्कार, अनुशासन और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का सजीव दर्शन था। संचलन के मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत किला मैदान धार में दोपहर 4 बजे हुई। हजारों स्वयंसेवकों ने अनुशासित तरीके से खड़े होकर वहां से प्रचल किया। पथ संचलन नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरा । किला मैदान से प्रारम्भ होकर घोड़ा चौपाटी, पाटीदार तिराहा, कुम्हार गड्डा, बस स्टैंड, पट्टा चौपाटी, नालछा दरवाजा, पो चौपाटी, राजवाडा, आनंद चौपाटी, नर्सिंग चौपाटी, मोहन टाकिज से उदाजीराव चौपाटी होते पुनः किला मैदान में समापन हुआ ।

संचलन के पूर्व मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में संत श्री विभंजन सागर जी मुनिराज विराजित रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री रघुवीरसिंह जी सिसोदिया, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- मालवा प्रांत सहकार्यवाह की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम के विशेष अतिथि के रूप में श्री प्रकाश जी बाफना उद्योगपति व समाजसेवी उपस्थित रहे। नगर संघचालक डॉ दिनेश कर्मा मंचासीन रहे। अतिथि स्वागत विभाग कार्यवाह श्री अरविंद चौधरी ने किया।

मुख्य अतिथि के रूप में विराजित संत श्री विभंजन सागर जी मुनिराज ने अपने आशीर्वचन में कहा पावन शताब्दी के अवसर पर सभी स्वयंसेवकों को साधुवाद। राष्ट्र को समर्पित संगठन हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। स्वयंसेवक दूरदृष्टि का भाव रख राष्ट्र को परमवैभव पर पहुंचे इसलिए स्वयंसेवक अपने हित को नहीं अपितु राष्ट्रहित को प्राथमिकता देता है । दृष्टि से दिशा और दिशा से जीवन की दिशा बदल जाती है पहले मैं नहीं राष्ट्र को देखना ही स्वयंसेवक का भाव होता है।

आदिनाथ भगवान की पांच शिक्षा

अपने को बदलो दुनिया को नहीं , अपना कार्य स्वयं करो दूसरों से अपेक्षा नहीं। जीवन में स्वतंत्र रहों गुलाम नहीं। स्वछंद नही बनना जहां रहो जैसे रहों खुश रहों। अहिंसा धर्म को अपनाना और सत्य धर्म का पालन । उन्होंने कहा कि शाखाओं के माध्यम से शारीरिक- मानसिक के साथ साथ चारित्रिक गुणों का विकास भी हो रहा है। संघ के अनुसांगिक संगठनों से भी सभी को जुड़ना चाहिए।

पाश्चात्य संस्कृति में विश्व एक व्यापार है हमारी संस्कृति कहती विश्व एक परिवार है। हमारी संस्कृति की पहचान हमारे आचरण से है। कुटुम्ब प्रबोधन समरसता स्वदेशी हमारे आचरण में होना चाहिए। भारतीय अर्थव्यवस्था का सहयोग हमारे सभी के कर्तव्य के जागरण से ही होगा। मातापिता के चरण छुने में जो आनंद है वो हाथ मिलाने में नहीं।मुनिराज ने कहा संघ के स्वयंसेवकों का समर्पण त्याग और साधना मुझ सहित हम सभी के लिए प्रेरणा है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री रघुवीरसिंह जी सिसोदिया ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा की हम सौभाग्यशाली स्वयंसेवक हैं जो संघ का शताब्दी वर्ष देख रहे है। और यह अवसर हमें हमारे पुरोधा रहे स्वयंसेवको के परिश्रम से मिला है। एक समय ऐसा था जब हिंदुत्व के भाव मे कमी आई और हम पर विदेशी आक्रांताओं ने राज किया। जब 1921में डॉ हेडगेवारजी को जेल हुई तब उन्होंने चिंतन किया और पाया कि हमारे समाज में ही विकृत्ति आ गई हैं और उसे दूर करने और हिन्दू समाज को संगठित करने हेतु 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। तब लोगों ने उनका उपहास भी किया।लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी निरन्तर संघ कार्य करते हुए समाज जागरण का कार्य किया।नतीजा यह हुआ कि संघ की एक घंटे की शाखा से व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य बढ़ता गया।हमें भारत को पुनः अखण्ड राष्ट्र बनाना है तो शक्ति की आराधना आवश्यक है। उन्होंने संघ की सौ वर्षों की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा 1925 से 1940 तक सारे आन्दोलन इस कालखंड में अपने चरम पर थे। ऐसे समय में डॉ केशव बलीराम हेडगेवारजी ने संत-महन्त व समाज को संगठित करना तथा प्राप्त स्वतंत्रता को स्थायित्व देना। इस हेतु क्रांतिकारी व राष्ट्रवादियों के सतत् संपर्क में रहे ओर संघ को 1925 में अपने घर से संघ की स्थापना कर 17 बालकों के सह घोष से संघ प्रारंभ किया।सन 1928 में संघ का नामकरण हुआ। इस बीच वर्धा के वर्ग में गांधी जी भी आए व संघ कार्य से प्रभावित हुए।

विजयादशमी ही संघ स्थापना का एक पवित्र कालखंड है। इसलिए स्वयंसेवक विजयादशमी उत्सव मनाते आ रहे हैं। संघ की आगामी कार्य योजना को विस्तार से बताते हुए रघुवीर जी ने कहा कि अपने देश को सम्पन्न बनाने के लिए हमे प्रथम स्व के भाव का जागरण करना,दूसरा नागरिक शिष्टाचार का पालन करना, तीसरा कुटुंब व्यवस्था को सम्भालकर रखना और परिवार में मंगल सभा करना। चौथा सामाजिक समरसता का पालन करना और पाँचवा पर्यावरण संरक्षण इन पाँच बिंदुओं पर कार्य कर हमें अपने राष्ट्र को सम्पन्न बनाना है।

घोष की दस इकाईयों ने उत्साहवर्धन किया...

संचलन का विराट रूप होने से इस वर्ष संघ के घोष दल को लेकर विशेष तैयारी की गई थी । 182 वादकों ने अभ्यास किया था। संघ घोष आम समाज के लिए बहुत ही आकर्षण का केंद्र बना । घोष को लेकर कार्यकर्ता विगत कई दिनों से निरन्तर अभ्यास कर रहे थे । घोष दल मे 11 पथक 1 प्रगत पथक जो कि 7 से ज्यादा रचनाओं का वादन किया। जिसमें मेवाड़, सोनभद्र, श्री राम,वीमीरा भूप, शिवरंजनी, उदय शामिल थे । जिसके मधुर स्वर पर स्वयंसेवक कदमताल करते नजर आएं ।

विराट स्वरूप लिए पथ संचलन की झलकियां...

* हज़ारों की संख्या में स्वयंसेवक संघ की गणवेश धारण करते हुए अनुशासन के साथ कदमताल मिलाते हुए संचलनों में चल रहे थे ।

* 75 वर्ष से अधिक उम्र के स्वयंसेवकों ने भी की सहभागिता ।

*संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने पर 100 मंचों से अधिक मंचो से हुआ नगर में स्वागत।

* संघ का घोष दल बना पूरे शहर के लिए आकर्षण का केंद्र...

* धार नगर का ऐतिहासिक पथ संचलन रहा....

नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम का हुआ भव्य आयोजन, वीरांगना रानी दुर्गावती को किया नमन

नारी सशक्तिकरण ही समाज के उत्थान का आधार: केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर

धार। अदम्य साहस, शौर्य और पराक्रम की प्रतिमूर्ति महान वीरांगना रानी दुर्गावती जी की जयंती के अवसर पर रविवार को धार के पीजी कॉलेज ऑडिटोरियम में 'नारी शक्ति संवाद' कार्यक्रम का आयोजन महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में महिलाओं की भूमिका को और सशक्त बनाना तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाना रहा। सर्व प्रथम रानी दुर्गावती जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नारी शक्ति, सामाजिक कार्यकर्ता एवं छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की। विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद एवं भाजपा प्रदेश महामंत्री डॉ कविता पाटीदार, धार विधायक नीना विक्रम वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती एवं ग्रामीण जिलाध्यक्ष चंचल

पाटीदार की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष कुसुम सोलंकी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि 'वीरांगना रानी दुर्गावती जी का जीवन त्याग, साहस और मातृभूमि के लिए बलिदान का अनुपम उदाहरण है। उनकी जयंती पर नारी शक्ति संवाद का आयोजन यह संदेश देता है कि हमारी मातृशक्ति समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका निभा रही है। आज आवश्यकता है कि हम सभी मिलकर महिलाओं को आत्मनिर्भर, शिक्षित और सुरक्षित बनाने के लिए सतत प्रयास करें।' उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'नारी शक्ति' को राष्ट्रनिर्माण की धुरी मानते हुए 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना', 'लाडली बहना' जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सशक्त करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी प्रदेश में महिलाओं के सर्वांगीण उत्थान एवं सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। मंत्री सावित्री ठाकुर जी ने यह भी उल्लेख किया कि आज महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल, उद्योग एवं रक्षा जैसे प्रत्येक क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ा रही हैं। यह हमारे समाज के लिए गर्व की बात है कि केंद्र और राज्य सरकारों के संयुक्त प्रयासों से महिलाओं को अब केवल 'सहभागी' ही नहीं, बल्कि 'नेतृत्वकर्ता' की भूमिका प्रदान की जा रही है।

भोपाल में सड़क हादसे में सुपरवाइजर की मौत

बाइक से नाश्ता करने के लिए निकला था, खजूरी इलाके की घटना

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक होटल पर नाश्ता करने जा रहे बाइक सवार को अज्ञात करने टक्कर मार दी । घायल युवक की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई ।

घटना रविवार सुबह खजूरी सड़क थाना इलाके की है। दोपहर को पीएम के बाद शॉप परिजनों के हवाले कर दिया है । मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है । पुलिस के मुताबिक कमलेश यादव पुत्र मूलचंद यादव (40) मूल रूप से रीवा का रहने वाला था । बीते 1 साल से खजूरी इलाके में रह रहा था और वही एक सरकारी प्रोजेक्ट में सुपरवाइजर का काम करता था । सुबह 8 अपनी बाइक पर सवार होकर नाश्ता करने के लिए होटल की ओर जा रहा था ।

राहगीरों की मदद से घायल को अस्पताल पहुंचाया–खजूरी सड़क थाने के करीब मुख्य मार्ग पर अज्ञात कार ने उसे जोरदार टक्कर मार दी, राहगीरों ने उसे इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया जहां पर उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई ।

सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही पुलिस–मामले में खजूरी सड़क थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है । टक्कर मारने वाले वाहन चालक की फिलहाल पहचान नहीं की जा सकी है। पुलिस घटनास्थल के करीब लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाल रही

सिंगरौली में धरती हिली, सुबह भूकंप के झटकों से सहमे लोग ,घरों से बाहर निकले, कई इलाकों में मचा हड़कंप

सिंगरौली (मध्यप्रदेश)। शनिवार सुबह सिंगरौली जिले में धरती अचानक कांप उठी। सुबह करीब 3.1 तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र सिंगरौली ही बताया जा रहा है, जो जमीन से लगभग 10 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था।

अचानक हिली धरती, लोग बोले — क्या तुम्हें भी झटका महसूस हुआ- जैसे ही झटके महसूस हुए, लोग घरों से बाहर निकल आए। बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग सभी खुले मैदानों में पहुंच गए। कई इलाकों में लोगों के बीच अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

एक-दूसरे से लोग पूछते नजर आए – क्या तुम्हें भी कुछ हिला महसूस हुआ? कुछ मिनटों तक पूरे क्षेत्र में भय और सन्नाटा दोनों साथ-साथ महसूस हुए।

राहत की खबर- नहीं हुई किसी तरह की जनहानि–हालांकि इस हल्के भूकंप से किसी प्रकार की जनहानि या नुकसान की सूचना नहीं मिली है। भूकंप का असर कुछ सेकंड तक ही रहा, लेकिन लोगों के दिलों की धड़कनें तेज कर गया। प्रशासन ने किया अलर्ट जारी, लोगों से सतर्क रहने की अपील भूकंप के झटके के बाद जिला प्रशासन ने अलर्ट जारी कर लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। प्रशासन ने कहा है कि अगर दोबारा झटके महसूस हों, तो तुरंत खुले स्थान पर पहुंच जाएं, ऊंची इमारतों, दीवारों और बिजली के खंभों से दूरी बनाए रखें।

लोगों में बढ़ी चिंता — आखिर बार-बार क्यों हिल रही धरती? स्थानीय लोगों के मन में अब यह सवाल उठ रहा है कि आखिर सिंगरौली में बार-बार कंपन की स्थिति क्यों बन रही है? विशेषज्ञों के अनुसार सिंगरौली का इलाका हल्की भूकंपीय गतिविधियों वाला

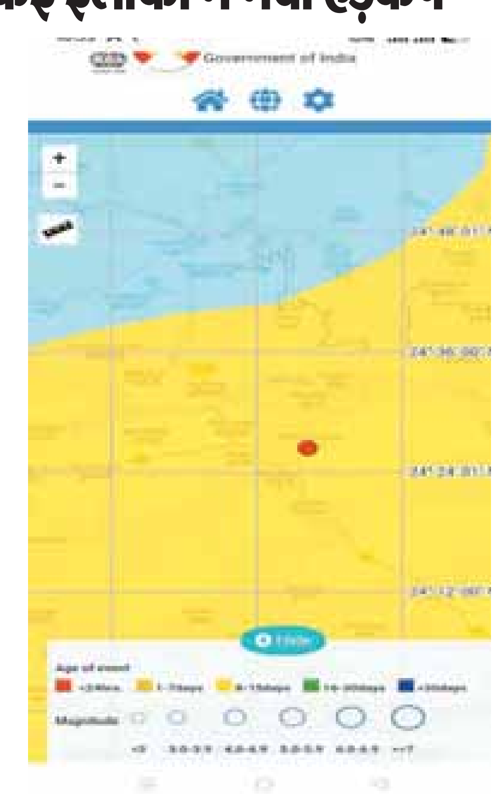

क्षेत्र माना जाता है। लोगों का कहना है कि प्रशासन को अब आपदा प्रबंधन की तैयारियां और मजबूत करनी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति में किसी तरह की जान-माल की हानि न हो।

ट्रक ने ई-स्कूटी को रौंदा, ट्रेजरी अफसर-प्रॉपर्टी डीलर जिंदा जले

खंडवा में पहियों में फंसकर घिसटते चले गए, बैटरी में ब्लास्ट से लगी आग

खंडवा (नप्र)। खंडवा में एक ट्रक ने ई-स्कूटी सवार दो युवकों को रौंद दिया। दोनों युवक ट्रक के पहियों में फंस गए। स्कूटी की बैटरी में ब्लास्ट के साथ आग लग गई। दोनों जिंदा ही जल गए। लोगों को बचाने तक का मौका नहीं मिला।

हादसा इंदौर-इच्छापुर हाईवे पर रविवार दोपहर को हुआ। पुलिस के अनुसार, मृतकों की पहचान विनीत पिता महेश शर्मा और सैयद मोहसिन पिता एजाज अली के रूप में हुई है, दोनों बड़वाह के रहने वाले थे। विनीत शर्मा खंडवा कलेक्ट्रेट में सहायक कोषालय अधिकारी थे और 2015 से खंडवा में पदस्थ थे। उनके परिवार में 3 साल की बेटी है। उन्होंने कुछ समय पहले ही ओला स्कूटी खरीदी थी। वहीं, सैयद मोहसिन प्रॉपर्टी और एलआईसी का काम करते थे।

बस के ओवरटेक करते ही सामने आया ट्रक–मोरटक्का पुलिस के अनुसार, मेघना बस बड़वाह से सनावद जा रही थी। उसके ठीक पीछे विनीत और मोहसिन अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटी पर थे। मोरटक्का में रिलायंस पेट्रोल पंप के पास बस ने किसी वाहन को ओवरटेक किया, उसी समय सामने से राखड़ से भरा ट्रक आ रहा था। ट्रक ड्राइवर बस से बचने के लिए अनियंत्रित हो गया। बेकाबू ट्रक उन्हें रौंदता हुआ रॉन्ग साइड पर जाकर एक खेत में घुस गया।

क्रेन से ट्रक को पलटाकर निकाले जा सके शव– ट्रक के नीचे फंसे होने के कारण स्कूटी की बैटरी में ब्लास्ट हो गया और आग लग गई। आग ने ट्रक के टायरों को भी अपनी चपेट में ले लिया। दोनों युवकों को बचने का कोई मौका नहीं मिला। उनकी मौके पर ही जलकर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस को शव निकालने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। बाद में एक क्रेन की मदद से ट्रक को पलटवाया गया, तब जाकर दोनों के शव बाहर निकाले जा सके।

जबलपुर के लंकेश ने दोस्तों से कहा था...ये आखिरी त्योहार, अटैक से मौत

50 साल से कर रहे थे रावण की पूजा; बेटों की शादी के कार्ड में भी छपवाया 'जय लंकेश'

जबलपुर (नप्र)। महाकौशल अंचल में बीते 50 सालों से हर दशहरे पर 'जय लंकेश, जय लंकेश' की गूंज सुनाई देती थी। इस आवाज के पीछे थे जबलपुर के पाटन निवासी लंकेश उर्फ़ संतोष नामदेव। शनिवार को हार्ट अटैक से उनका निधन हो गया।

लंकेश की मौत की खबर लगते ही पूरे जिले में शोक की लहर दौड़ गई। दशानन का किरदार निभाने वाले इस रावण भक्त ने अपने जीवनकाल में देहदान किया था, लेकिन उनकी पत्नी ने अनुमति नहीं दी। इसके चलते रविवार को पाटन मुक्तिधाम में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

संतोष की आखिरी इच्छा थी कि उनका अंतिम सफर ढोल, शहनाई और आतिशबाज़ी के साथ निकले। उनके दोस्तों ने इस इच्छा को पूरा करने की तैयारियां शुरू कर दी हैं।

सैनिक से बने रावण–पाटन के संतोष नामदेव, जिन्हें लोग प्यार से लंकेश कहते थे, कभी दशहरा मैदान में सैनिक की भूमिका निभाते थे। मगर उनकी बुलंद आवाज और दमदार संवाद ने उन्हें रावण बना दिया, और फिर यही किरदार उनकी जिंदगी बन गया।संतोष के परिवार की पुश्तैनी टेलर की दुकान है। पिता चाहते थे कि बेटा दुकान संभाले, लेकिन संतोष का मन रामलीला में बसता था। एक बार जब मंच संचालकों ने उन्हें रावण की भूमिका दी, तो उनके संवादों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। तभी से वे रावण के भक्त बन गए।रामलीला के श्लोकों से प्रेरित होकर उन्होंने रावण को भगवान शिव का परम भक्त मानते हुए उसकी पूजा शुरू की। शुरू में पत्नी ने इसे मजाक समझा, लेकिन जब संतोष ने पूजा घर में रावण की प्रतिमा स्थापित कर दी, तो दोनों के बीच विवाद भी हुआ।धीरे-धीरे संतोष पूरी तरह 'लंकेश' बन गए। उन्होंने अपनी दुकान का नाम जय लंकेश टेलर्स रखा और अपने दोनों बेटों को मेघनाथ और अक्षय नाम से पुकारने लगे।

राक्षस कुल को तारने के लिए रावण ने किया हर कार्य–लंकेश का मानना था कि लंका के राजा रावण में भले ही कुछ कमियां रही हों, लेकिन उनके भीतर असीम ज्ञान और विद्वता थी। वे कहते थे कि मैं रावण की अच्छाइयों को आगे बढ़ा रहा हूं। रावण महान पंडित थे, उनमें कोई अवगुण नहीं था।

संतोष नामदेव उर्फ लंकेश पिछले 50 वर्षों से रावण की आराधना कर रहे थे। उनका कहना था कि जो भी उन्हें जीवन में मिला, वह रावण भक्ति का ही फल है। उनकी हर मनोकामना रावण की कृपा से पूरी हुई। लंकेश का विश्वास था कि लंकाधिपति रावण ने जो भी किया, वह अपने राक्षस कुल को तारने के लिए किया। उन्होंने माता सीता का अपहरण तो किया, लेकिन उन्हें अशोक वाटिका में रखा, जहां न कोई नर, न राक्षस, और न ही पशु-पक्षी तक जाने की अनुमति थी।संतोष ने 1975 में पहली बार अपने घर में रावण की पूजा शुरू की।

बेटों की शादी के कार्ड में भी छपवाया 'जय लंकेश'–रावण भक्त संतोष नामदेव ने अपनी भक्ति को जीवन के हर पल में उतार दिया था। उन्होंने अपने दोनों बेटों के नाम मेघनाथ और अक्षय रखे थे। 2016 में जब छोटे बेटे मोनू की शादी हुई, तो उन्होंने विवाह कार्ड पर 'पं. जय लंकेश गुरुदेवाय नमः' लिखवाया।निमंत्रण पत्र देखकर लोग चौंक गए। कई लोगों ने कहा कि शादी के कार्ड पर भगवान गणेश के नाम की जगह 'जय लंकेश' लिखना उचित नहीं है, लेकिन संतोष ने किसी की परवाह नहीं की।कहा जाता है कि पूरे महाकौशल ही नहीं, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश में उनसे बड़ा रावण भक्त कोई नहीं था। दशहरा के दौरान उनके रावण पंडाल में जबलपुर और आसपास के क्षेत्रों से लोग जुटते थे।

दशहरा में लंकेश प्रतिमा की स्थापना–संतोष नामदेव जितना भगवान राम और शिव की उपासना करते थे, उतनी ही श्रद्धा से वे रावण की भी पूजा करते थे। उनका मानना था कि रावण प्रखर, विद्वान और दानवों में सबसे बुद्धिमान थे, और यही वजह थी कि वे भगवान शिव के बड़े भक्त कहलाए।

पेशे से टेलर मास्टर रहे संतोष ने 1975 में पहली बार अपने घर में रावण की पूजा शुरू की। इस पर परिवार, रिश्तेदार और पड़ोसियों ने विरोध किया, लेकिन उन्होंने सबकी बातों को नजरअंदाज कर रोजाना पूजा जारी रखी।जहां लोग दशहरे पर रावण दहन में शामिल होते हैं, वहीं संतोष उर्फ लंकेश रावण की प्रतिमा स्थापित कर उन्हें विसर्जित करते थे। शुरुआत में पाटन क्षेत्र में उनका विरोध हुआ, लेकिन उनकी भक्ति देखकर धीरे-धीरे लोग उनके साथ जुड़ते गए। अब जब लंकेश की पूजा होती थी, तो बच्चे और बड़े सभी बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर 'जय लंकेश' बोलते थे।

दोस्त से बोले- शायद ये आखिरी त्योहार–नवरात्रि के बाद दशहरा में जहां रावण दहन होता था, वहीं संतोष नामदेव उर्फ़ लंकेश रावण की पूजा कर प्रतिमा को नर्मदा नदी में विसर्जित करने जाते थे। उनके परम मित्र दीपक जैन हर साल उनके साथ ऑटो में रावण की प्रतिमा लेकर विसर्जन के लिए चलते थे।शनिवार दोपहर को संतोष ने दीपक से मुलाकात की और कहा कि शाम चार बजे नर्मदा नदी जाना है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि इस बार लंकेश महाराज यह आयोजन नहीं चाहते और शायद यह उनका अंतिम विसर्जन हो।दीपक ने उनकी चिंता को टालते हुए कहा कि ऐसी बातें मत करो, घर जाओ और तैयार हो जाओ, थोड़ी देर में हम चलेंगे।

पत्नी ने फोन कर बताया- संतोष की तबियत अचानक बिगड़ी– संतोष उर्फ़ लंकेश के दोस्त और भाजपा पार्षद दीपक जैन ने बताया कि दोपहर में बातचीत के बाद वह पाटन की काली माता विसर्जन कार्यक्रम में शामिल हो गए थे।शाम करीब 4 बजे संतोष की पत्नी का कॉल आया कि उनकी तबियत अचानक बिगड़ गई है। तुरंत घर पहुंचे और उन्हें पाटन स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।दीपक जैन ने बताया कि कोरोना काल 2021 में संतोष ने बिना किसी को बताए अकेले ही जबलपुर कलेक्टर से मिलकर अपनी देहदान की इच्छा पूरी कर दी थी। हालांकि, परिवार इस कदम के लिए तैयार नहीं था।

राम मंदिर दर्शन की थी अंतिम इच्छा– रावण के भक्त संतोष नामदेव पूजा के दौरान हमेशा 'ओम नमः शिवाय' के साथ-साथ 'जय लंकेश' का जाप करते थे। उनकी अंतिम इच्छा थी कि अयोध्या जाकर भगवान राम के दर्शन कर सकें। दोस्तों के बीच बैठकर संतोष अक्सर कहते थे कि अब राम मंदिर बनकर तैयार हो गया है, इसलिए उनकी यह अंतिम इच्छा है कि वह रामलला के दर्शन करें। उनका मानना था कि दशानन रावण ने भी अपने अंतिम समय में भगवान श्रीराम के दर्शन किए थे, इसी तरह वे भी अयोध्या जाकर रामलला के दर्शन करना चाहते थे।

11 दिन से वेंटिलेटर पर डेढ़ साल की धानी

किडनी ने काम करना बंद किया, दिमाग तक पहुंचा जहर, पिता बोले- सोचा दवा है, निकला जहरीला सिरप

भोपाल (नप्र)। मेरी बेटी सिर्फ डेढ़ साल की है। 4 दिन तक डॉक्टर की बताई दवा पिलाई। अब वह 11 दिन से वह वेंटिलेटर पर जिंदगी और मौत के बीच झूल रही है। ये शब्द हैं छिंदवाड़ा जिले के जूनापानी गांव के नवीन देहरिया के। उनकी मासूम बेटी धानी जहरीले सिरप का शिकार हो गई। नवीन ने कहा कि धानी की किडनी काम करना बंद कर चुकी है और अब जहर उसके दिमाग तक पहुंच चुका है। शरीर पर अब किसी भी दवा या गोली का असर नहीं हो रहा। यहां नागपुर में डॉक्टर कह रहे हैं कि बीमारी के बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं है। अस्पताल के गलियारों का सन्नाटा और धानी की बिगड़ती सेहत हर बीतते पल के साथ हमारी उम्मीदें तोड़ रही हैं।

बता दें, नागपुर के परासिया क्षेत्र के ही चार और बच्चे भर्ती हैं। सभी बच्चों की हालत लगभग एक जैसी है। सभी के परिजन

वहां असहाय बैठे हैं। छिंदवाड़ा जिले का यह मामला न सिर्फ मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश की दवा व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रहा है।

12 दिन में बदल चुके 4 अस्पताल– नवीन देहरिया ने बताया कि सबसे पहले 24 सितंबर को बेटी को बुखार आया। वे इलाज के लिए परासिया के स्पेशलिस्ट डॉ. प्रवीण सोनी के पास गए। जांच में डेंगू की पुष्टि हुई। खांसी की शिकायत होने पर डॉक्टर ने कोल्ड्रिफ सिरप दिया।

नवीन के अनुसार, चार दिन तक वही सिरप पिलाया और साथ में डेंगू के इंजेक्शन लगे। लेकिन, 28 सितंबर की रात अचानक बच्ची को उल्टी आने लगी। हमने फिर डॉ. सोनी को दिखाया, उन्होंने कहा कि किडनी में इन्फेक्शन है और हमें परासिया के सरकारी अस्पताल भेज दिया। वहां से हमें छिंदवाड़ा भेज दिया गया। टेस्ट हुए और किडनी की समस्या पाई गई। इसके बाद धानी को छिंदवाड़ा से नागपुर रेफर कर दिया गया। तब से हम यहीं हैं लेकिन बच्ची को एक प्रतिशत भी आराम नहीं मिला है।

पिता का दर्द– ना नेता, ना अधिकारी ने पूछा हाल–नवीन देहरिया का कहना है कि इतने बड़े हादसे के बाद भी अब तक किसी अधिकारी या नेता ने फोन तक नहीं किया। सरकार कह रही है कि फार्मा कंपनियों पर कार्रवाई होगी। लेकिन हम जानते हैं कि दोषी लोग पैसे भरकर छूट जाएंगे और बच्चों की जान का कोई मोल नहीं रहेगा। सरकार को अब सिर्फ बयान नहीं बल्कि ठोस कदम उठाने चाहिए।

गाइडलाइन 0.1 प्रतिशत, लेकिन मिला 48.6 प्रतिशत जहरीला केमिकल– मध्यप्रदेश एफडीए के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि गाइडलाइन के अनुसार कफ सिरप में अधिकतम 0.1 प्रतिशत डाईथाइलीन ग्लॉयकाल की मौजूदगी स्वीकार्य है। लेकिन जांच में सामने आया कि कोल्ड्रिफ सिरप में यह मात्रा 48.6 प्रतिशत थी। यह बेहद घातक और जानलेवा स्तर है, जिससे किडनी फेल और ब्रेन डैमेज जैसी स्थितियां पैदा हो जाती हैं।

जबलपुर में कटारिया फार्मास्यूटिकल सील

छिंदवाड़ा में सप्लाई की थी कोल्ड्रिफ सिरप, गोदाम में भी मिली थीं 66 बोतलें

जबलपुर (नप्र)। छिंदवाड़ा में बच्चों की मौत का कारण बने कोल्ड्रिफ कफ सिरप का मामला अब जबलपुर तक पहुंच गया है। जिला प्रशासन ने रविवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए नोदरा ब्रिज स्थित कटारिया फार्मास्यूटिकल को सील कर दिया। चेन्नई की प्रसिद्ध श्री सन फार्मा कंपनी की जबलपुर में बीते 20 वर्षों से डीलरशिप कटारिया फार्मास्यूटिकल के पास थी।

जबलपुर कलेक्टर के निर्देश पर ड्रग इंस्पेक्टर प्रवीण पटेल और नायब तहसीलदार आदर्श जैन टीम के साथ रविवार दोपहर मौके पर पहुंचे। जांच में कंपनी के दस्तावेज, स्टॉक रजिस्टर और वितरण रिकॉर्ड खंगाले गए। जांच के दौरान गोदाम में 66 बोतलें कोल्ड्रिफ सिरप की मिलीं, जिनमें से 16 बोतलें लैब टेस्टिंग के लिए भोपाल भेजी गई हैं। मौके पर स्वयं प्रोप्राइटर राजपाल कटारिया मौजूद रहे।

भोपाल से आई लैब में हुआ कंफर्म– ड्रग इंस्पेक्टर प्रवीण पटेल ने बताया कि छिंदवाड़ा में बच्चों की मौत जिन सिरप से हुई, वे कटारिया फार्मास्यूटिकल जबलपुर से ही सप्लाई हुई थीं। कुल 660 बोतलें सिरप की सप्लाई की गई, जिनमें से 594 बोतलें छिंदवाड़ा भेजी जा चुकी थीं। भोपाल की लैब से आई रिपोर्ट में

यह कन्फर्म हुआ कि दवा अमानक थी और इसी के सेवन से बच्चों की मौत हुई। रिपोर्ट मिलते ही जबलपुर प्रशासन ने गोदाम सील कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी। अधिकारियों ने बताया कि जांच के दौरान दवा स्टाक से लेकर वितरण नेटवर्क तक की पूरी चेन की पड़ताल की जा रही है। कटारिया फार्मास्यूटिकल की जबलपुर और अन्य जिलों में हुई सप्लाई की भी जानकारी मांगी गई है। जांच पूरी होने तक दफ्तर सील रहेगा। इस कार्रवाई के बाद जबलपुर के दवा व्यापारियों में हड़कंप मच गया है। कई अन्य फार्मा डीलरशिप पर भी अब प्रशासन की निगाहें हैं। अधिकारियों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि गुणवत्ता में जरा-सी चूक पर भी लाइसेंस रद्द किया जाएगा और एफआईआर दर्ज होगी।

जहरीली कफ सिरप से मासूमों की मौत पर प्रदर्शन

कांग्रेस ने उपमुख्यमंत्री से इस्तीफे की मांग की; खिलौनों को बीजेपी के गमछे से फांसी लगाते हुए दर्शाया

भोपाल (नप्र)। छिंदवाड़ा में जहरीली कफ सिरप से एक दर्जन से ज्यादा मासूम बच्चों की मौत के विरोध में मध्यप्रदेश कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी के नेतृत्व में कांग्रेस और एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया।

कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने कहा कि प्रदर्शन के दौरान 12 खिलौना बच्चों को बीजेपी के गमछे से फांसी लगाते हुए प्रतीकात्मक रूप से सरकार की संवेदनहीनता और प्रशासनिक लापरवाही को दर्शाया गया।प्रदर्शनकारियों ने सड़क पर बैठकर जहरीली कफ सिरप की बोतलों के पोस्टर और उपमुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र शुक्ल के इस्तीफे की मांग लिखी तख्तियां लेकर नारेबाजी की।

कफ सिरप निर्माताओं पर तत्काल कार्रवाई हो–कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने प्रदेश सरकार और स्वास्थ्य विभाग पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि इतने बड़े हादसे के बावजूद अब तक जांच रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई है और न ही दोषियों पर कोई ठोस कार्रवाई हुई है। इतने गंभीर हादसे के बाद भी सरकार चुप है और दोषियों को बचाया जा रहा है। आखिर बाकी बचे हुए 7 सैंपलों की रिपोर्ट में देरी क्यों हो रही है? मासूमों की मौत के जिम्मेदार अधिकारियों और कफ सिरप निर्माताओं पर तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए। सरकार को नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए स्वास्थ्य मंत्री को इस्तीफा देना चाहिए, वरना कांग्रेस सड़क से सदन तक आंदोलन करेगी। सरकार को जवाब देना होगा कि जो दवाइयां अन्य राज्यों में प्रतिबंधित हैं, वे मध्यप्रदेश के दवा बाजार में किसकी अनुमति से बिक रही थीं। कांग्रेस नेता प्रकाश चौकसे ने कहा कि भाजपा सरकार में स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह चरमरा गई हैं। बच्चों की मौत सरकार की विफलता का सबूत है। कांग्रेस इस मामले को दबने नहीं देगी। जब तक पीड़ित परिवारों को न्याय नहीं मिलता, तब तक यह विरोध जारी रहेगा। खानापूर्ति की कार्रवाई नहीं चलेगी।

अस्पतालों के बाहर जनआंदोलन की चेतावनी–एनएसयूआई जिला अध्यक्ष अक्षय तोमर ने कहा कि यदि सरकार ने दोषी अधिकारियों के निलंबन की तत्काल कार्रवाई नहीं की, तो एनएसयूआई प्रदेश के सभी जिलों के शासकीय अस्पतालों के बाहर जनआंदोलन करेगी।

संघ के शताब्दी वर्ष में मप्र के भीतर दूसरा बड़ा संचलन शुरू

आरएसएस मप्र में 9000 से ज्यादा जगह हिंदू सम्मेलन करेगा

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने अपने 100 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इसके अंतर्गत तीन मुख्य कार्यक्रम संघ इस वर्ष करने वाला है। इसमें पहला कार्यक्रम पथ संचलन प्रारंभ हो चुका है।

इसके ठीक के बाद संघ मध्य प्रदेश में करीब 9000 से अधिक स्थानों पर हिंदू सम्मेलन करेगा। इसके साथ ही आरएसएस की युवा सम्मेलन, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर मीट के जरिए जेनरेशन जेड यानी युवाओं को बड़ी संख्या में संगठन से जोड़ने की योजना है। फिलहाल सबसे बड़ा कार्यक्रम पथ संचलन है, जिसका दूसरा बड़ा चरण रविवार को था। मप्र में 9291 स्थानों पर संघ ने पथ संचलन का लक्ष्य रखा है। इसमें रविवार को करीब डेढ़ हजार स्थानों पर संचलन निकाले गए। यह अभियान मप्र में इंदौर क्षेत्र से 20 सितंबर से शुरू हो चुका है और 15 अक्टूबर तक चलेगा। इस अभियान के जरिए संघ ने मप्र में 900 से अधिक गांवों में नई शाखाएं, करीब डेढ़ करोड़ घरों तक संपर्क और 12 लाख नए गणवेशधारी स्वयंसेवकों के पथ संचलन का लक्ष्य रखा है, जबकि बीते साल करीब 11 लाख स्वयंसेवक संचलन में शामिल हुए थे। नए को मिलाने के बाद बीते साल से संख्या लगभग दोगुनी हो जाएगी। खास बात यह है कि संघ इन कार्यक्रमों के माध्यम से अपना दायरा बढ़ा रहा है और पहली बार नगर व खंड के स्थान पर सिर्फ बस्ती व मंडल स्तर पर पथ संचलन निकाले जा रहे हैं, जबकि पहले कभी-कभी बस्ती व मंडल में पथ संचलन निकलते थे।

सबसे ज्यादा संचलन महाकौशल में-संघ ने राजस्व सीमा की बजाय लोगों की सुविधा को ध्यान में रखकर अपने विभाग, जिले, नगर और खंड की सीमाएं तय की हैं। संघ के मप्र में तीन प्रांत हैं, यानी मप्र को तीन हिस्सों में बांटा गया है। इनमें मध्यभारत प्रांत के बैतूल, हरदा, नर्मदापुरम, सीहोर, रायसेन, विदिशा, भोपाल, राजगढ़, गुना, अशोक नगर, शिवपुरी, दतिया, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड समेत 17 जिले हैं, जिनमें 775 बस्ती और 1814 मंडल हैं।

रविवार को यहां करीब करीब 500 स्थानों पर संचलन निकला। इसी प्रकार महाकौशल प्रांत के तहत जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, बालाघाट, दमोह, सागर समेत विंध्य के सभी जिलों को मिलाकर 24 जिलों में 917 बस्ती और 2634 मंडल आते हैं। यह सबसे बड़ा प्रांत है और यहां करीब 700 स्थानों पर संचलन निकले। ऐसे ही मालवा में इंदौर, देवास, उज्जैन, मंदसौर, नीमच, अलीराजपुर, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा समेत 14 जिलों में करीब 400 से 500 संचलन निकाले जाएंगे। संघ के मालवा प्रांत में 1785 बस्ती और 1366 मंडल आते हैं। यहां 20 सितंबर से पथ संचलन शुरू हो चुका है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने असम के गुवाहाटी में आयोजित मध्यप्रदेश में निवेश की संभावनाएं इंटरेक्टिव सेशन में निवेशकों को संबोधित किया।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

कार्यकर्ताओं की पीड़ा हरने छह मंत्रियों की ड्यूटी

छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बने करीब-करीब दो साल होने को हैं। दो साल में भाजपा ने लोकसभा से लेकर पंचायत चुनाव तक जीत लिया। सभी जगह ट्रिपल इंजन की सरकार हो गई। इसके बाद भी संगठन को कार्यकर्ताओं की नाराजगी की शिकायत मिल रही है। अब पहले चरण में छह अक्टूबर से विष्णुदेव साय के छह मंत्री एक - एक दिन बैठकर कार्यकर्ताओं का दुःख-दर्द सुनेंगे और उसे हल करेंगे। पहले दिन छह अक्टूबर को राजस्व और उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा प्रदेश भाजपा कार्यालय में दोपहर को तीन घंटे बैठेंगे। इनके बाद अगले दिन स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव की पारी है। ऐसे ही वन मंत्री केदार कश्यप, तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास मंत्री गुरु खुशवंत साहेब और खाद्य मंत्री दयालदास बघेल कार्यकर्ताओं की बात सुनेंगे। इसके पहले भी मंत्री पार्टी दफ्तर में जाकर समस्या निवारण शिविर का आयोजन कर चुके हैं, फिर भी कार्यकर्ताओं का भड़ास कम होने का नाम नहीं ले रहा है। कहते है पिछले दिनों भाजपा की एक महिला नेता समय लेकर एक मंत्री से मिलने गईं, दो घंटे के इंतजार के बाद मंत्री जी नहीं मिले और महिला नेता को मंत्री जी से बिना मिले लौटना पड़ा। इसके पहले वित्त मंत्री ओपी चौधरी से मुलाक़ात नहीं होने पर भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को गुस्से में चिट्ठी छोड़कर आना पड़ा था, फिर जाकर कुछ दिनों बाद मुलाक़ात हो सकी।

दवा सप्लायरों ने मुंह मोड़ा

कहते हैं कि दवा सप्लायरों ने छत्तीसगढ़ से मुंह मोड़ लिया है। बताते हैं सरकार को फिलहाल 120 करोड़ की दवाई खरीदनी है, पर कोई सप्लायर टेंडर में हिस्सा नहीं ले रहा है। खबर है कि तात्कालिक व्यवस्था के लिए सरकार ने बड़े अस्पतालों को दवाई खरीदी के लिए हर महीने 20 लाख रुपए देने का फैसला किया है, जिससे वे लोकल मैनेज कर लें। चर्चा है कि दवा खरीदी घोटाले में मोक्षित कार्पोरेशन और अन्य पर सख्ती के बाद दवा सप्लायर दहशत में आ गए हैं और कोई भी बड़ा सप्लायर अपना गला नहीं फंसाना चाहता है। इसके अलावा कुछ सप्लायरों का भुगतान भी अटका पड़ा है।सूचना है कि वे पिछला भुगतान क्लीयर होने से पहले छत्तीसगढ़ में नया काम करने के इच्छुक नहीं हैं। बताते हैं सरकार साल में करीब 250 करोड़ रुपए की दवाई खरीदती है और पहले चरण में ही ब्रेक लग गया है। अब देखते हैं आगे क्या होता है और सरकारी अस्पतालों में मरीजों को दवा किस तरह उपलब्ध कराई जाती है।

क्या इस बार ओपी चंद्रपुर से लड़ेंगे ?

हल्ला है कि वित्त और पर्यावरण मंत्री ओपी चौधरी 2028 का विधानसभा चुनाव चंद्रपुर से लड़ेंगे। चंद्रपुर में अभी कांग्रेस के रामकुमार यादव विधायक हैं। भाजपा ने 2023 के विधानसभा चुनाव में चंद्रपुर से जशपुर राजपरिवार की सदस्य को टिकट दिया, पर वे चुनाव हार गईं। ओपी चौधरी अभी रायगढ़ से विधायक हैं। चौधरी 2018 में आईएएस की नौकरी छोड़कर खरसिया विधानसभा से चुनाव लड़े थे और हार गए थे। बताते हैं रायगढ़ में बिजनेस कम्युनिटी का दबदबा है। ओपी चौधरी अपने विधानसभा में विकास कार्य की गंगा बहा रहे हैं, तो रवि भगत जैसे भाजपा के नेता खुलकर विरोध भी कर रहे हैं। पिछले दिनों ओपी चौधरी आरएसएस के गणवेश में भी नजर आए। अब देखते हैं राजनीतिक समीकरण क्या बनता है ?

ननकीराम का गुस्सा और रेणुका की बात क्या गुल खिलाएगा

भाजपा के वरिष्ठ नेता ननकीराम कंवर गुस्से में हैं, वे कोरबा कलेक्टर अजीत बसंत को हटाने की मांग कर रहे हैं। अपनी मांग मनवाने के लिए वे चार अक्टूबर को रायपुर में धरने पर बैठने वाले थे, पर उन्हें हाउस अरेस्ट कर लिया गया। चार अक्टूबर को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ दौरे पर थे, तो सरकार कोई बखेड़ा नहीं चाहती थी। पर लोग सवाल उठा रहे हैं कि भाजपा की सरकार में भाजपा नेता बड़ा या कलेक्टर ? दो दिन पहले भाजपा की विधायक रेणुका सिंह ने विजयादशमी के कार्यक्रम में सरकार में भी रावण की बात कर कांग्रेस के हाथ में मुद्दा दे दिया। भाजपा नेताओं के तेवर से कांग्रेस के लोग खुश हैं और 2028 में अपने लिए अनुकूल माहौल मान रहे हैं। रेणुका सिंह 2023 के चुनाव के बाद मुख्यमंत्री की दौड़ में थीं। विधानसभा चुनाव लड़ने से पहले केंद्र में राज्य मंत्री रहीं रेणुका राज्य में मंत्री भी नहीं बन पाईं। ननकीराम और रेणुका ही नहीं, भाजपा के भीतर असंतुष्टों की फेहरिस्त बताई जाती है। कहा तो यह भी जाने लगा है कि भाजपा के भीतर ही विरोधी दल तैयार हो गया है।

भाजपा की एक नेत्री भी कोरबा कलेक्टर से नाराज

चर्चा है कि कोरबा के कलेक्टर अजीत बसंत से भाजपा के वरिष्ठ नेता ननकीराम कंवर ही नहीं,भाजपा की एक वरिष्ठ महिला नेता भी नाराज हैं। वरिष्ठ महिला नेता की नाराजगी को दूर करने के लिए अजीत बसंत को हटाने का विचार चल रहा था, पर विष्णुदेव साय के एक मंत्री और एक आईएएस ने उन्हें बचा लिया। अजीत बसंत को विष्णुदेव साय की सरकार में ही कोरबा का कलेक्टर बनाया गया। इसके पहले वे नारायणपुर और मुंगेली जिले के कलेक्टर थे। बताते हैं अजीत बसंत एक वरिष्ठ सचिव की पसंद पर कोरबा भेजे गए हैं। भाजपा की एक वरिष्ठ महिला नेत्री, कलेक्टर अजीत बसंत के खिलाफ मैदान पर तो नहीं उतरीं, पर ननकीराम कंवर सड़क पर उतर गए हैं। शुक्रवार की रात को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने फोन पर ननकीराम से बात की, तो उनके सामने कलेक्टर को हटाने की शर्त रखी।

कांफ्रेंस के बाद कलेक्टरों के ट्रांसफर

विष्णुदेव साय की सरकार ने रविवार 12 अक्टूबर को कलेक्टर कांफ्रेंस रखा है। मुख्यमंत्री ने कांफ्रेंस के लिए छुट्टी का दिन चुना है, जिससे वर्किंग डे में कलेक्टरों की गैरमौजूदगी में सरकारी कामकाज प्रभावित न हो और जनता को भटकना न पड़े। कहा जा रहा है कि छुट्टी के दिन कलेक्टर कांफ्रेंस से कुछ अफसर असहज हुए, पर मुख्यमंत्री के लिए रोज वर्किंग डे है। चर्चा है कि कांफ्रेंस के बाद कई जिलों के कलेक्टर इधर से उधर होंगे। कुछ जिलों के कलेक्टर फील्ड से मंत्रालय या एचओडी में आएंगे। कुछ आईएएस मंत्रालय से जिलों में जाएंगे। कहते हैं दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर और सरगुजा संभाग के कलेक्टर ज्यादा प्रभावित होंगे।

मंत्री पर भारी आयोग अध्यक्ष

बताते हैं एक आयोग के अध्यक्ष एक मंत्री पर भारी पड़ रहे हैं। आयोग के अध्यक्ष संगठन के खाटी नेता हैं और काफी वरिष्ठ भी, जबकि मंत्री पहली बार के विधायक हैं। कहते हैं आयोग के अध्यक्ष अपनी सुख-सुविधा के लिए मंत्री पर काफी दबाव बना रहे हैं। संगठन के वरिष्ठ नेता होने के कारण अध्यक्ष जी को कुछ बोल पाना भी संभव नहीं हो रहा है। बताते हैं आयोग अध्यक्ष के दबाव से बचने के लिए आयोग का पालक विभाग ही बदल देने का प्रस्ताव तैयार कर लिया है। याने न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। अब देखते हैं मुख्यमंत्री से प्रस्ताव को मंजूरी मिलती है या नहीं।

राजस्व मंडल में डायरेक्ट आईएएस

सरकार ने 1992 बैच के आईएएस सुब्रत साहू को राजस्व मंडल का अध्यक्ष बनाया है। कहते हैं लंबे समय बाद सरकार ने सीनियर अफसर और डायरेक्ट आईएएस को राजस्व मंडल का अध्यक्ष बनाया है। सीके खेतान के बाद पदोन्नत आईएएस और सचिव स्तर के अधिकारी राजस्व मंडल की कुर्सी पर बैठाए गए। उमेश अग्रवाल, रीता शांडिल्य और टोपेश्वर वर्मा के बाद अब सुब्रत साहू राजस्व मंडल की कुर्सी संभालेंगे। सुब्रत साहू मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी हैं। राजस्व मंडल के अध्यक्ष का पद मुख्य सचिव के समकक्ष है। सुब्रत साहू राजस्व मंडल के अध्यक्ष के साथ प्रशासन अकादमी के अध्यक्ष भी रहेंगे, वह भी मुख्य सचिव के स्तर का पद है।